Courier Correo Courrier

October 2014
Volume 29, Number 5

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

Congreso Mundial Menonita
A Community of Anabaptist related Churches

Conference Mennonite Mondiale
A Community of Anabaptist related Churches

3
दृष्टिकोण
कलीसिया नेतृत्व में अधिकार का प्रयोग

6
प्रेरणा और मनन
अनेकता एक चुनौती

8
पेन्नसिलवेनिया 2015 समाचार 4

9
प्रेरणा और मनन
एकता की गवाही

11
सहायक सामग्री/संसाधन
विश्व सहभागिता रविवार 2015

13
देश
कनाडा

सन्निविष्ट
कूरियर न्यूज

मुखपृष्ठ का चित्र:

हेबेकर मेनोनाइट चर्च (लेनकास्टर, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए) के सदस्य अपने एशियाई बगीचे में कार्य करते हुए। हेबेकर की कलीसिया एक अन्तरसांस्कृतिक और अन्तरभाषीय कलीसिया है जिसमें अधिकांश सदस्य कोरेन जनजाति से है। कोरेन मूल रूप से बर्मा की एक जाति है, ये लोग अपने देश में दशकों से चल रहे लम्बे गृहयुद्ध के कारण पलायन कर संयुक्त राज्य अमरीका में आकर बस गए। हेबेकर कलीसिया के पास्टर कोरेन सेनसिनिग के अनुसार, कोरेन जनजाति की संस्कृति ने अब कलीसिया की सेवकाइयों में अपनी एक जगह बना ली है। उदाहरण के लिए, रविवार के दिन, किशोरों का एक क्वायर बड़े जोश के साथ बर्मिज़ भाषा में गीत गाते हुए आराधना का आरम्भ करता है। एक एशियाई बगीचा भी है – जिसे लगाए अब चार वर्ष हो चुके हैं – अलग अलग संस्कृतियों के कलीसियाई सदस्य मिलकर इसमें कार्य करते हैं।

हेबेकर कलीसिया से कोरेन जनजाति के अनेक किशोर पेन्नसिल्वेनिया 2015 में शामिल होने जा रहे हैं, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस का यह अगला सम्मेलन, 21–26 जुलाई 2015 हेरिसबर्ग पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में आयोजित किया जा रहा है। यह जानने के लिए, कि इस कलीसिया ने इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए रचनात्मक रूप से किस प्रकार से धन का संग्रहण किया, एमडब्ल्यूसी की वेबसाइट www.mwc-cmm.org देखें। फोटो: जोनाथन चार्ल्स

Courier Correo Courrier

Mennonite World Conference · Congreso Mundial Menonita · Conference Mennonite Mondiale

Volume 29, Number 5

Courier/Correo/Courrier मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस का एक प्रकाशन है, यह वर्ष में छह बार चार पृष्ठ की समाचार पत्रिका के रूप में "News/Noticias/Nouvelles" शीर्षक से प्रकाशित की जाती है – जिसमें सामयिक समाचार और बड़ी खबरें शामिल की जाती है। वर्ष में दो बार, यह समाचार पत्रिका सोलह पृष्ठ की एक पत्रिका का रूप ले लेती है, जिसमें प्रेरणादायक सन्देश, अध्ययन, शिक्षात्मक और सचित्र लेखों को शामिल किया जाता है। हर संस्करण अंग्रेजी, स्पेनिश, और फ्रेंच भाषाओं में प्रकाशित किया जाता है।

सीज़र गार्सिया प्रकाशक
रोन रेम्पल प्रमुख सम्प्रेषण अधिकारी
ग्लेन फ्रेट्ज़ डिज़ाइनर
सिलवि गुडिन फ्रेंच अनुवादक
मार्सिया और यूनीके मिलर स्पेनिश अनुवादक

Courier/Correo/Courrier निवेदन पर उपलब्ध है।
सभी पत्र इस पते पर भेजें:
MWC, Calle 28A No. 16-41 Piso 2,
Bogota, Colombia

Email: info@mwc-cmm.org
www.mwc-cmm.org

Courier/Correo/Courrier (ISSN 1041-4436) is published six times a year. Twice a year, the newsletter is inserted into 16-page magazine. Mennonite World Conference, Calle 28A No. 16-41 Piso2, Bogota. Colombia
Publication Office: Courier, 451B Pleasant Valley Road, Harrisonburg VA 22801 USA, Periodical postage paid at Harrisonburg VA, Printed in USA.
POSTMASTER: Send Address Changes to Courier, 451B Pleasant Valley Road, Harrisonburg VA 22801 USA.

सम्पादक की कलम से

''अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सबके मध्य में, और सब में है।'' (इफिसियों 4:2–6)।

इस समय, जब मैं इस सम्पादकीय को लिख रहा हूँ, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के अगले सम्मेलन पेन्नसिलवेनिया 2015 का पंजीकरण आरम्भ होने की उल्टी गिनती आरम्भ हो चुकी है। (और जब यह पत्रिका आपके हाथों में होगी, तब तक पंजीकरण आरम्भ हो चुका होगा!) यह विश्वव्यापी सम्मेलन 21–26 जुलाई 2015 में हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम को लेकर हमारी उत्सुकता बढ़ती जा रही है – लेकिन यह उत्सुकता सिर्फ एमडबल्यूसी केअगुवों और स्टाफ तक ही सीमित नहीं है। संसार भर में, लोग विभिन्न देशों और कलीसिया समुदाय के अपने ऐनाबैपटिस्ट भाई बहनों के साथ एकत्र होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पेन्नलिसवेनिया 2015 से यह आशा है कि हम इस अवसर पर पौलुस प्रेरित के इन वचनों को अवश्य साकार करेंगे, ''और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो'' (इफिसियों 4:3)।

उत्तरी अमरीका में इस विश्वव्यापी सम्मेलन की ओर देखते हुए, हम *Courier/Correo/Courrier* के इस अंक में अनेकता और एकता के जटिल और कटीले विषय पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। विभिन्न सांस्कृतिक, आर्थिक, और राजनैतिक पृष्ठभूमि के ऐनाबैपटिस्ट लोगों के रूप में, हम में विभिन्न समुदायों की अनेकता झलकती है। तौभी हम एक समान विश्वास के द्वारा एक है। इस सच्चाई के प्रकाश में, हम अपनी अनेकता का सामना कैसे करेंगे? और हम अपनी एकता किस प्रकार से व्यक्त करेंगे? अधिक स्पष्ट शब्दों में, अनेकता किस प्रकार से हमारे सामने चुनौती रखती है – कि हम स्वयं की प्रतिबद्धताओं पर पुनर्विचार करें और विभिन्न धारणाओं के विश्वासियों के साथ अपने सम्बन्धों का भी ध्यान रखें? साथ ही, हम अपनी एकता को कैसे व्यक्त करें – और हमारी एकता किस प्रकार से संसार में हमारी गवाही को दिशा दे सकती है?

इस अंक के ''प्रेरणा और मनन'' खण्ड में, फर्नांडो एन्रस् और जेनेट प्लेनेर्ट दोनों ने ही अलग अलग लेखों में इस मुद्दे पर चर्चा किया है। जबकि हम जुलाई 2015 में विश्वास के एकघराने के रूप में एकत्र होने की तैयारी कर रहे हैं, इन लेखों पर चिन्तन करने पर हमें बहुत सी बातों पर विचार करने का अवसर मिलेगा।

25 वर्षों में पहली बार उत्तरी अमरीका में होने वाले आगामी विश्व सम्मेलन की कुछ और तैयारियों के रूप में, इस अंक में कनाडा देश के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातों को प्रस्तुत किया गया है। रॉयडन लोयवन के द्वारा लिखित इस लेख में कनाडाई ऐनाबैपटिस्टवाद का एक सारगर्भित किन्तु सूक्ष्म चित्रण किया गया है – इसका इतिहास और वर्तमान वास्तविकताएं, इसकी समकालीन अनेकता और चुनौतियाँ।

इस अंक में कुछ अन्य लेख भी हैं। ''दृष्टिकोण'' के खण्ड में, विश्व के भिन्न भिन्न स्थानों के लेखकों के द्वारा उनकी अलग अलग अनेक सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों में कलीसियाई नेतृत्व में अधिकार के प्रयोग से सम्बन्धित विचारों पर प्रकाश डाला गया है। तथा ''सहायक सामग्री/संसाधन'' के खण्ड में, हम जनवरी 2015 में आयोजित आगामी वर्ल्ड फैलोशिप सण्डे के प्रमुख विषय और उद्देश्य पर नज़र डालेंगे।

जबकि हम पेन्नसिलवेनिया 2015 में भाग लेने की तैयारी में लगे हुए हैं, आइये हम विश्वास के अपने विश्वव्यापी घराने के महत्व को नए सिरे से आँके। आइये हम अपनी अनेकता का आनन्द उठाएं, यद्यपि हम इससे जुड़ी चुनौतियों से परिचित हैं। आइये हम अपनी एकता की गवाहीं दे, लेकिन कभी भी परमेश्वर के द्वारा हमें दी गई सांस्कृतिक भिन्नताओं को अनदेखा न करें ताकि हमारी विश्वव्यापी सहभागिता अधिक समृद्ध बने। और अन्तिम बात, आइये हम एक ऐसा जीवन व्यतीत करें जो हमारे विश्वास की सच्चाई को साकार करता हो: एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा – और एक ही परमेश्वर, ''जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है'' (इफिसियों 4:5–6)।

डेविन मानजुलो – थॉमस मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के लिए सम्पादक के रूप में अपनी सेवाएं देते हैं।

अधिकार का प्रयोग

एक साथ मिलकर कलीसिया की भूमिका पूरी करने के लिए अपनी संयुक्त प्रतिबद्धताओं को पहचानें

ऐनाबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओं की एक विश्वव्यापी सहभागिता के रूप में, हम एक कलीसिया के रूप में एक साथ मिलकर आगे बढ़ने में एक संयुक्त प्रतिबद्धता के भागीदार हैं। हम यह भी मानते हैं कि कलीसिया में ऐसे अगुवों की आवश्यकता है जो झुण्ड की अगुवाई और चरवाही करने की जिम्मेदारी सम्भाल सकें। तौभी हम यह जानते हैं कि कलीसिया नेतृत्व की अलग अलग पृष्ठभूमि में, अधिकार के पद का प्रयोग अनेक अलग अलग तरीकों से किया जाता है। *Courier/Correo/Courrier* के इस अंक में, ऐनाबैपटिस्ट सहभागिता के भिन्न भिन्न स्थानों के लेखकों ने उन तरीकों पर चर्चा की है जिनसे ऐनाबैपटिस्ट लोग कलीसिया नेतृत्व में अधिकार के प्रयोग के मुद्दे को व्यवहार में लाते हैं – इन लेखों में इस विषय में सामने आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों के साथ साथ इससे जुड़ी आशीषों और लाभों पर भी चर्चा की गई है।

हम में ऐसा नहीं है

क्योंग जुंग किम

दशक भी नहीं हुए हैं, जब से ऐनाबैपटिस्ट विश्वास दक्षिण कोरिया के मसीही जीवन में उभर कर सामने आया है। 1996 में, एक सा मन रखने वाले मसीहियों के एक झुण्ड ने – ऐनाबैपटिस्ट के उभरते हुए दर्शन के भागी बन कर – अपनी माता कलीसियाओं से अपना पुराना तोड़ लिया, इनमें से अधिकांश प्रोटेस्टेंट कलीसियाएं थीं। गहन बाइबल अध्ययन में काफी समय व्यतीत करने और कलीसिया इतिहास व धर्मविज्ञान पर पर्याप्त शोध करने के बाद, उन्होंने यह पाया कि उन्हें अब नया नियम आधारित एक नयी कलीसिया आरम्भ करने की आवश्यकता है।

मुख्यधारा की कलीसियाओं से सम्बन्ध विच्छेद करना एक बात थी; परन्तु एक नई कलीसिया को आरम्भ करना पूरी तरह से भिन्न। उस समय तक भी, ऐनाबैपटिस्टवाद को नकारात्मक भाव से देखा जाता था, और इसलिए इस दर्शन को अपनाने का अर्थ था, मुख्यधारा की परम्परा की लहरों के विपरीत जाना। और यह तो उनकी संस्कृति से और भी विपरीत और विरुद्ध था कि वे पूरी तरह से वापस जा कर पहली शताब्दी के आरम्भ के समय की कलीसिया का अनुसरण करना चाहते थे!

उस समय से, दक्षिण कोरिया में ऐनाबैपटिस्ट तंत्र धीरे धीरे बढ़ता जा रहा है, और लोग इस तरोताज़ा विचार की ओर आकर्षित हो रहे हैं कि कलीसिया का वास्तविक अर्थ क्या है।

एक प्रश्न मन में आ सकता है: एक सा मन रखने वाले इन व्यक्तियों को अपनी माता कलीसियाओं को छोड़ कर एक नया कलीसियाई आन्दोलन आरम्भ करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? यद्यपि अलगाव के अनेक कारण थे – मुख्य कारणों में से एक – शायद सबसे निर्णायक कारण – कलीसिया के वास्तविक स्वाभाव को लेकर उनकी समझ। उनके लिए कलीसिया कोई संस्थागत सम्प्रदाय नहीं थी जो स्वयं ही अनिवार्य रूप से अधिकार का गैरबराबर और अनियमितताओं वाला कोई ढांचा तैयार करे। बल्कि, उनके दर्शन की कलीसिया मसीह की देह थी, जिसमें विश्वासी भाई बहनों को समान अधिकार दिए गए थे।

अधिकार एक ऐसी चीज़ है जिसकी लालसा करना मनुष्यजाति का स्वाभाव है। इतिहास भर में कोई भी व्यक्ति अधिकार के प्रलोभन या आकर्षण से बच नहीं पाया है; यहाँ तक कि यीशु की भी परीक्षा शैतान के द्वारा उसके अधिकार का प्रयोग करने के विषय में ली गई थी। कलीसिया के भीतर पाए जाने वाले लोग भी इससे नहीं बच सके हैं; वास्तविकता तो यह है कि कलीसिया के अनेक अगुवे उन्हें मिले अधिकार का प्रयोग दूसरों पर शासन करने के लिए करते हैं।

ठीक ऐसा ही 2,000 वर्ष पूर्व यीशु के चेलों के बीच भी हुआ था। वे एक दूसरे से वाद–विवाद करने लगे कि उन के बीच में सबसे बड़ा कौन है। और उनमें से दो चेले, याकूब और यूहन्ना ने, सीधे सीधे अपने लिए अधिकार के विशेष पद की मांग की – मसीह की महिमा में एक को बाएं हाथ और दूसरे को दाहिने हाथ पर (मरकुस 10:37)। उनकी माता भी चाहती थी कि यीशु उन्हें यह अधिकार प्रदान करें। ''मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दहिने और एक तेरे बाएं बैठें'' (मत्ती 20:21)। इस प्रकार के निवेदन ने अन्य चेलों को परेशान कर दिया और याकूब और यूहन्ना से क्रुद्ध हो जाने के लिए बाध्य कर दिया। इस बात में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वे इस मुद्दे पर वाद–विवाद करने लगे!

> ''बहुत कम लोग ही अधिकार के पद के भ्रष्ट कर देने वाले प्रभाव को पहचान पाते हैं, और उससे भी कम लोगों को यह बोध हो पाता है कि किस प्रकार से अधिकार के इस पद का कलीसिया के भीतर तथाकथित 'अगुवों' के द्वारा गलत प्रयोग किया जा सकता है।''

अन्तत:, यीशु ने उन्हें एक साथ बुलाकर कहा: तुम जानते हो, कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते है; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया, कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया, कि आप सेवा टहल करें, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दें'' (मरकुस 10:42–45)।

यह बहुत ही शर्मनाक बात है कि अनेक बार मसीही लोग अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने के लिए अधिकार और यश को पाने के पीछे लगे रहते हैं। मैं ऐसा इसलिए नहीं कहता क्योंकि मैं दूसरों से बेहतर हूँ, परन्तु इसलिए क्योंकि मैं भी सांसारिक अधिकार पाने के लिए अपने भीतर परीक्षा का सामना करता हूँ, यदि मैं अपने आप को परमेश्वर के आत्मा के वश में नहीं रखता। यह दुखद है कि बहुत कम लोग ही अधिकार के पद के भ्रष्ट कर देने वाले प्रभाव को पहचान पाते हैं, और उससे भी कम लोगों को यह बोध हो पाता है कि किस प्रकार से अधिकार के इस पद का कलीसिया के भीतर तथाकथित ''अगुवों'' के द्वारा गलत प्रयोग किया जा सकता है।

हमें ''अगुवा'' कहलाना अच्छा लगता है। हम सब के भीतर यह प्रवृत्ति होती है कि हम इस पद की चाह करें – साथ ही इसके साथ मिलने वाले अधिकार, शक्ति, और प्रतिष्ठा की भी। परन्तु हमें जिसे पाने का प्रयास करना वह उस तरह का अधिकार व शक्ति नहीं जिसके विषय में संसार सिखाता है। बल्कि, हमें एक ऐसे अधिकार व सामर्थ की चाह रखना है जो हमें परमेश्वर की ओर से हमें तब मिलता है जब हम अपनी निर्बलता में होते हैं तौभी परमेश्वर की सामर्थ देने वाली आत्मा के द्वारा जीवित किए जाते हैं। यह सामर्थ एक सेवक बनने के लिए दी जाने वाली सामर्थ है, अगुवा बनने के लिए नहीं। यह सामर्थ दीन और नम्र बनने के लिए दी जाने वाली सामर्थ है, दूसरों को नियंत्रण में रखने के लिए नहीं। यह सामर्थ हमें अपने बैरियों से प्रेम रखने के लिए दी जाने वाली सामर्थ है, उन्हें समाप्त करने के लिए नहीं। यह सामर्थ हमें इसलिए दी जाती है कि हम दूसरों के लिए अपना प्राण तक दे दें, जिस तरह से, हमारा प्रभु इसलिए आया कि बहुतेरों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दें।

आइये हम ठान लें कि शैतान के फन्दे में न फँसें, जिसमें फँस कर हम अक्सर ऐसा मान बैठते हैं कि हम अधिक बड़े पद में आसीन होने के कारण ही परमेश्वर से प्रतिफल प्राप्त कर रहें हैं। शिष्यता की कीमत पर ऐसा कोई प्रतिफल नहीं दिया जाता। बल्कि, यह हमारे सामने एक कटोरा और एक क्रूस रख देता है: ''जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, उसे लोगे। पर जिन के लिए तैयार किया गया है, उन्हें छोड़ और किसी को अपने दहिने और अपने बाएं बिठाना मेरा काम नहीं'' (मरकुस 10:40)।

परमेश्वर हमें सामर्थ प्रदान करें कि हम अपने आप को सांसारिक आकांक्षाओं से मुक्त कर पाएं, और अपनी निर्बलताओं में भी उसकी सामर्थ पर निर्भर रहें।

क्योंग–जुंग किम एमडबल्यूसी के उत्तरपूर्व एशिया क्षेत्रीय प्रतिनिधि के रूप में अपनी सेवाएं देते हैं। 2004 से वे कोरिया ऐनाबैपटिस्ट सेन्टर में निदेशक के रूप में कार्यरत हैं, यह संस्था दक्षिण कोरिया की ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं की एक सेवकाई है।

आशीष या एक शाप?

डोरिस ड्यूब

लीसिया नेतृत्व से जुड़े अधिकार के सम्बन्ध में मैंने सबसे पहली बार जिस बात की ओर ध्यान दिया था, वह यह था, कि मेरी कलीसिया के पासवान को बड़ी श्रद्धा का पात्र समझा जाता था। कलीसिया की आराधना आरम्भ होने के समय वे और कुछ अन्य अगुवे सभा भवन में दिखाई नहीं देते थे; वे पीछे किसी कक्ष में रहते थे। गीत आरम्भ होता था और फिर ये अगुवे बाइबल और गीत की पुस्तक को अपने बाजुओं में दबाए हुए पंक्तिबद्ध हो कर सभा भवन में प्रवेश किया करते थे। गीत की समाप्ति पर सभा कक्ष में पूरी तरह से मौन व उत्सुकता का माहौल रहता था।

बिना किसी ठोस आधार के, अनजाने में मेरे मन में यह धारणा बन गई कि पास्टर एक पवित्र व्यक्ति होता है – हम शेष लोगों की तुलना में वह परमेश्वर के अधिक निकट होता है। मैंने यह भी देखा कि पुलपिट से नीचे आने के बाद भी, यदि वह कुछ कह दे तो बिना कोई बहस किए सभी लोग तुरन्त उसकी बात मान लिया करते थे। मैं अपने आसपास के व्यस्क लोगों को बातें करते और अक्सर पास्टर को उद्धरित करते हुए सुनती थी, ''पास्टर साहब ने ऐसा कहा है . . .।'' यह कुछ इस तरह से था मानों पास्टर ही सर्वेसर्वा हो। मैंने भी उनके प्रति और अपनी पहचान के सभी पास्टरों के प्रति श्रद्धा रखना सीख लिया था।

जैसे जैसे मैं बड़ी होती गई और स्वयं बाइबल पढ़ने लगी, मैंने अपने सृष्टिकर्ता के साथ अपने एक नए आत्मीय सम्बन्ध को अनुभव किया। परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच में सम्बन्ध के बारे में मेरी समझ में एक बहुत बड़ा बदलाव आया – और इसके परिणामस्वरूप, कलीसिया के अगुवों के प्रति मेरी समझ में भी एक बड़ा बदलाव आ गया। यद्यपि अब भी मेरे आत्मिक अगुवों का स्थान मेरी दृष्टि में बहुत ऊँचा है, परन्तु मुझे यह बोध हुआ कि वे मनुष्य हैं और उनमें भी शेष लोगों के समान मनुष्य में पाई जाने वाली सभी कमजोरियाँ और त्रुटियाँ पाई जाती हैं।

अपने मसीही जीवन में मैंने अनेक अगुवों के अधिकार के आधीन रहते हुए परमेश्वर की आराधना किया है। मेरी कलीसिया इबान्डला लाबाजालवाने कुक्रिस्तु इजिम्बाब्वे (ब्रदरन इन ख़ाइस्ट चर्च इन जिम्बाब्वे) में अगुवों की अलग अलग श्रेणी के पद हैं, जैसे बिशप, अध्यक्ष, पास्टर, और डीकन। इस कारण जितनी संख्या में मेरे अगुवे रहे हैं उतने ही अगुवाई के अलग अलग तरीकों को भी मैंने देखा और अनुभव किया है। कलीसिया की एक आम सदस्या के रूप में मैं यह देखती हूँ कि सभी अगुवों के पास अधिकार और सामर्थ होती है, और यह सामर्थ या तो सकारात्मक या फिर नकारात्मक होती है। अगुवे – जो सब के सब मनुष्य हैं और इस कारण उनसे भी गलतियाँ होना अटल है – जिस तरीके से अपने अधिकार का प्रयोग करते हैं उसी के अनुरूप वे अपने लोगों को दिशा देते हैं।

अधिकार का एक सकारात्मक प्रयोग है, आज्ञाकारिता। कुछ अवसरों पर अधिकार के इस प्रयोग का अर्थ अपनी आरामदायक और सुविधाजनक परिस्थिति को त्याग कर एक अनजानी नई परिस्थिति को अपनाना भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, 1960 में, मैं ब्रदरन इन ख़ाइस्ट युवा समूह का एक हिस्सा थी जो बुलवायो के एक नगर मपोपोमा के एक महिला–क्लब में संगति के लिए एकत्रित होता था। इस समूह को श्री खोनो नडलोवू और श्रीमती एब्बी ड्यूब (जिन्होंने 13 वर्ष तक पहले एक सण्डे स्कूल शिक्षिका और फिर सण्डे स्कूल अधीक्षिका के रूप में अपनी सेवाएं दी थीं) के द्वारा आरम्भ किया गया था। इन दो अगुवों ने सण्डे स्कूल और कलीसिया के युवा समूह के बीच के खालीपन को अनुभव किया। युवा अब सण्डे स्कूल में सिखाए जाने विषयों से आगे बढ़ कर एक नए प्रकार के विषय को सीखने के तैयार थे और साथ ही बहुधा व्यस्कों को ही ध्यान में रख कर संचालित की जाने वाली आराधनाओं से भी कुछ खास लाभ नहीं उठा पा रहे थे। इस आवश्यकता को पूरी करने के लिए, इन दो अगुवों ने एक मंच तैयार करने का निर्णय लिया, जिसके तहत युवा संगति कर सकें, और मिलकर खेलकूद, गीतसंगीत और बाइबल अध्ययन जैसी गतिविधियों में समय बिता सकें।

यह दर्शन ब्रदरन इन ख़ाइस्ट की अन्य कलीसियाओं में भी फैलता गया। वर्तमान में, हमारे पास कलीसिया की एक भुजा के रूप में युवाओं की एक मान्य सभा है।

''कलीसिया की एक आम सदस्या के रूप में मैं यह देखती हूँ कि सभी अगुवों के पास अधिकार और सामर्थ होती है, और यह सामर्थ या तो सकारात्मक या फिर नकारात्मक होती है। अगुवे जिस तरीके से अपने अधिकार का प्रयोग करते हैं उसी के अनुरूप वे अपने लोगों को दिशा देते हैं।''

इस आरम्भिक समूह में से अनेक युवा अब भी कलीसिया की सेवकाइयों में सक्रिय हैं। परमेश्वर की बुलाहट के प्रति आज्ञाकारिता दर्शाने के द्वारा इन दो अगुवों ने नेतृत्व की सकारात्मक शक्ति का प्रदर्शन किया।

अधिकार और सामर्थ का एक अन्य सकारात्मक प्रयोग यह है कि इसके द्वारा अगली पीढ़ी के अगुवे तैयार किए जाएं। चूंकि मैं अपने कलीसियाई जीवन में अब अधिक रूचि रखने लगी थी, मैंने बिशपों, अध्यक्षों, और पास्टरों के पदों से अनेक लोगों को सेवामुक्त होते और दूसरों को उनका स्थान लेते हुए ध्यान से देखा है। जब पद पर आसीन अगुवा अन्य योग्य अगुवे तैयार करता है, तो यह बदलाव सरल और प्रभावशाली ढंग से हो जाता है। अनेक ऐसे योग्य उम्मीदवार होते हैं जिनमें से सब से सहीं व्यक्ति को सही समय में चुनना होता है। यदि ऐसा नहीं हो पाता, तो कलीसिया आहत होती है। हर मूसा को एक या दो यहोशू तैयार करना चाहिए।

इसके विपरीत, जो अगुवे अपना स्थान लेने के लिए दूसरे अगुवे तैयार नहीं करते वे ऐसा न करने के द्वारा कलीसिया को कमजोर कर देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई पास्टर किसी एक ही कलीसिया में बहुत लम्बे समय तक बना रहता है, तो सम्भव है कि वह अपने अधिकार का नकारात्मक प्रयोग करने लगे। उसके निर्णय से कलीसिया को हानि हो सकती है। यदि उसे कोई विशेष वरदान मिला है, तो इसका लाभ सिर्फ उस एक कलीसिया को ही मिल पाएगा। परन्तु यदि वह अपने पद से मुक्त हो जाए या किसी दूसरे पद को स्वीकार कर ले, तो वह मसीह की देह की उन्नति करेगा।

नेतृत्व की एक और कमजोरी जिसके कारण कुछ अवसरों पर आपसी विवाद की स्थिति निर्मित हो सकती है, वह है, दूसरों को मिले वरदानों को पहचान न पाना और उनका उपयोग न कर पाना। इस वर्ष, हमारे अगुवों में से एक श्रीमती नेली म्लोटश्वा ने अपना अस्सीवाँ जन्मदिन मनाया। उनके परिवार ने उनके लिए एक पार्टी का आयोजन किया, और ब्रदरन इन ख़ाइस्ट कलीसिया के अनेक सदस्यों ने इस आयोजन में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान एक के बाद एक अनेक वक्ताओं ने यह गवाही दिया कि किस प्रकार से इस बुजुर्ग माता ने उनकी सेवा की और उनकी योग्यताओं को पहचानने में उनकी मदद की। जिन अगुवों के पास यह वरदान है और यदि वे इसका प्रयोग करते हैं, तो वे सचमुच में धन्य हैं। प्रभु का कार्य इतना लम्बा–चौड़ा है कि सब के सब इसमें सहभागी बन सकते हैं।

कभी कभी नेतृत्व के पद से जुड़े अधिकार और शक्ति से सम्बन्धित मुद्दे इतना खुल कर प्रगट नहीं होते जितना कि कलीसियाई जीवन के अन्य सामान्य मुद्दे। इन पर चर्चा नहीं की जाती। उदाहरण के लिए, जिम्ब्बावे की कलीसिया में बड़ी संख्या में ऐसी बहनें हैं जिन्हें परमेश्वर सामर्थ के साथ अद्भुत रीति से अपने कार्यों के लिए प्रयोग कर रहा है। उनकी अपनी एक सहभागिता है जिसके द्वारा वे कलीसिया की देह के पोषण और उन्नति में अपना योगदान देने में सक्षम है, जबकि उनकी ओर बहुत ही कम ध्यान दिया जा रहा है। इनमें से कुछ बहनें उन्हें मिले वरदानों के कारण अत्यंत प्रतिभाशाली हैं। कुछ बहनों में गजब की नेतृत्व–क्षमता है और वे सफलतापूर्वक अपने झुण्ड की देखभाल कर रहीं है।

यह भी, कि जिम्ब्बावे ब्रदरन इन ख़ाइस्ट कलीसिया में अब भी एक भी अभिषिक्त महिला नहीं है। समय समय पर इस स्थिति को लेकर प्रश्न उठाए गए हैं। इसका एक रटा–रटाया उत्तर दिया जाता है कि महिलाओं ने अपने आप को सामने नहीं लाया है या अभिषेक के लिए निवेदन नहीं किया है। दूसरी ओर नेतृत्व की क्षमता रखने वाले वरदान प्राप्त पुरुष से कलीसिया की पासबानी करने के लिए कहा जाता है; अन्ततः उनका अभिषेक भी कर दिया जाता है। ऐसी स्थिति में यह विचारणीय है कि कौन किस पर अधिकार का प्रयोग करता है?

नेतृत्व का अर्थ होता है अधिकार या बल। अधिकार एक नशा होता है। यदि हमें अधिकार दिया जाता है तो इसे अर्थपूर्ण ढंग से बाँटते हुए और नम्रता के साथ लागू करते हुए प्रयोग करना है। आज भी अगुवे अपने नेतृत्व की शैली और तरीके के द्वारा या तो कलीसिया को सशक्त बना रहे हैं या फिर उसे कमजोर कर रहे हैं। कुछ लोग साहस के साथ कठिन निर्णय लेते हैं ताकि कलीसिया को चंगा कर सकें, या इसे स्वस्थ रख सकें। कुछ अन्य अगुवे बुद्धिमानीपूर्वक किन्तु अलोकप्रिय निर्णय लेने का जोखिम उठाते हैं जिसके कारण उन्हें अकेले संघर्ष करना पड़ता है। धन्य हैं ऐसे अगुवे जो अपने अधिकार के स्रोत को जानते हैं और जो अपना रूख परमेश्वर और मनुष्य के बीच संतुलित रख सकते हैं। वे सचमुच में सामर्थी और अधिकारयुक्त पुरुष और महिलाएं हैं।

डोरिस ड्यूब एक लेखिका, शिक्षिका, अफ्रीका के लिए एमडबल्यूसी की भूतपूर्व क्षेत्रीय सम्पादिका, ग्लोबल मेनोनाइट हिस्ट्री सिरिज़ के अफ्रीकी संस्करण की सहलेखिका, और इबान्डला लाबाजालवाने कुक्रिस्तु इजिम्बाब्वे (ब्रदरन इन ख़ाइस्ट चर्च इन जिम्बाब्वे) की सदस्या हैं।

ड्रिव जी.आई. हार्ट

मय समय पर, मेरे कंधों पर हल्की थपकी देकर मुझ से कहा जाता है कि मैं स्थानीय अगुवों, कलीसियाओं, और मसीही संस्थाओं के लिए इस विषय पर प्रकाश डालूं कि हम अनेकताओं वाली और मेल कराई गई देह बनने में अधिक विश्वासयोग्य कैसे बन सकते हैं, जैसा कि परमेश्वर चाहता है। कुछ वर्ष पूर्व, यदि मैं इस विषय पर कुछ कहना चाहता तो मैं अपना सारा ध्यान और सारी उर्जा पवित्रशास्त्र पर आधारित नया नियम के मसीही समुदाय के दर्शन पर केन्द्रित करता, जिन्होंने हर एक दीवार को तोड़ दिया था, सबसे पहले यहूदी और अन्यजातियों के बीच के, और इसके साथ ही हर एक सामाजिक दीवार को भी, जिसमें वर्तमान समय का नस्लभेद भी शामिल है। शायद मैंने यह कहते हुए शुरुआत किया होता कि किस तरह से पौलुस ने इस विषय पर पतरस का सामना किया, या किस तरह से पवित्रशास्त्र में अन्य अन्य जाति के लोगों को कलीसिया का अंग बनाए जाने के द्वारा कलीसिया को अनेक जातियों वाले एक ऐसे नए समाज के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें पुराने सम्बन्धात्मक पहचानों और तंत्रों को यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए कार्यों के कारण फिर से एक नया रूप दिया गया, और वह दीवार जो हमें अलग करती थी गिरा दी गई, यह सब कुछ परमेश्वर के द्वारा मसीह में किया गया।

धर्मविज्ञान के दृष्टिकोण से मैं उपरोक्त बातों पर अब भी विश्वास करता हूँ। तौभी ऐसा लगता है कि इस व्याख्या में अधिकांश अमरीकी कलीसियाओं में सक्रिय कुछ ऐतिहासिक और वर्तमान बातों को शामिल नहीं किया गया है – और इन बातों पर शायद ही चर्चा होती है।

क्या यह सम्भव है कि हमारी प्राथमिक समस्या संयुक्त राज्य अमरीका में व्याप्त सांस्कृतिक और जातिगत भेद से ही सम्बन्धित नहीं है? क्या यह सम्भव है कि वास्तविक मुद्दा इसी विषय के आसपास घूमता है कि कलीसिया इतिहास और वृहद सामाजिक इतिहास में अधिकार को किस तरह से प्रयोग में लाया गया है?

उत्तर अमरीका में, कलीसिया ने उस हावी नस्लभेद से अब तक मन नहीं फिराया है जिसके आधार पर सत्रहवीं शताब्दी से कलीसिया की प्रथाएं, व्यवहार, दस्तूर और धर्मविज्ञान तय किए गए हैं। निश्चय ही दास–प्रथा का औपचारिक अन्त हो गया है, और इसके बाद से इस शब्द के उल्लेख मात्र पर ही समाज की मुख्य धारा के द्वारा इसे एक विनाशकारी कलंक करार दिया गया है और नकारात्मक प्रतिक्रिया दी गई है। इसके लिए किसी साहस की आवश्यकता नहीं है कि हम अमरीकी (मसीही) गुलाम इतिहास 1619–1865 की ओर पीछे मुड़ कर देखें, और इसे यीशु मसीह की शिक्षाओं के विपरीत बता कर इसका खण्डन करें।

किन्तु, अधिकांश मसीही समुदायों के भीतर, आज भी संयुक्त राज्य अमरीका में यीशु मसीह को प्रभु मानने वालों की सहभागिता में श्वेतनस्ल के प्रभुत्व वाली प्रथाओं और व्यवहारों के विषय नाजुक और संवेदनशील चर्चाओं में धीरजपूर्वक और सच्ची बात कहने के लिए अत्यंत दृढ़ता की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय तक इन प्रथाओं और व्यवहारों को कलीसिया में और कलीसिया के द्वारा कायम रखा गया है, और संसार में अपनी गवाही को कलंकित किया जा रहा है। दास–प्रथा जा चुकी है, परन्तु नस्लभेदी तर्क, जिसके द्वारा श्वेत लोग मसीही सहभागिताओं में (और इसके बाहर भी) अपना प्रभुत्व और नियंत्रण बनाए रखते हैं, आज भी वहीं के वहीं हैं।

यह एक अनिवार्य प्रश्न है कि क्यों उत्तर अमरीका की कलीसियाओं – ऐनाबैपटिस्ट समेत – में इस सच्चाई को समझ पाने की क्षमता नहीं है कि नस्लवाद धर्मविज्ञान और मसीही शिष्यता के क्षेत्र में चिन्तन का एक महत्वपूर्ण विषय है, यह कि कलीसिया में अधिकार के पदों पर भी नस्लवाद को हावी वर्ग विशेष के लाभ के लिए प्रभावी कर दिए जाने के कारण यह गड़बड़ी से प्रभावित होता है, और फिर नस्लभेदी दृष्टिकोण से इसे सहीं ठहरा दिया जाता है।

अवश्य ही, अनेक मसीही सहभागिताओं में ''अनेक'' समुदायों को शामिल कर मसीह में परमेश्वर के द्वारा किए गए मेलमिलाप को प्रदर्शित करना पसन्द किया जाता हो। किन्तु बहुत कम कलीसियाएं ही ऐसी होंगी जो उनके समुदायों को संचालित करने वाले एक विशेष वर्ग तक केन्द्रित अधिकार और नियंत्रण को हाथ से जाने देना चाहेंगी।

''समय आ चुका है कि हम अपने धर्मविज्ञान और दस्तूरों में पाई जाने वाली अनियमिताओं का सुधार हेतु पुर्नावलोकन करें ताकि हम एक नस्लभेदी समाज के बीच मसीह की शिक्षाओं को विश्वासयोग्यता से साकार कर सकें।''

यह मूलभूत दृष्टि से अनिवार्य है कि जब ''अनेक प्रकार के'' लोग इन ''स्वागत करने वाले'' समुदायों में प्रवेश करते हैं, तो मापदण्ड तय करते समय यहाँ धर्मविज्ञान, संस्कृति, और सामाजिक क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन आना आवश्यक है। जैसा कि अक्सर कहा जाता है, ''द व्हाइट वे इज़ द राइट वे'' (श्वेतों का तरीका ही सहीं तरीका है)। ऐसे मापदण्ड समाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से अलग विशुद्ध मसीही मूल्य नहीं होते। किन्तु, अक्सर इन्हें विशुद्ध मसीही मूल्य बता कर इनका प्रयोग किया जाता है और यह तर्क देकर सहीं भी ठहराया जाता है।

केनोसिस (फिलिप्पियों 2:5–11), – जो कि स्वयं को अधिकार से शून्य कर देने और नस्लभेद के शिकार और शोषित मसीहियों के साथ उनकी पीड़ा में सहभागी होने की सामर्थ है और जिसके द्वारा एक आपसी परिवर्तन हो सकता है – को अपने जीवन में लागू करने की बजाए, प्रभुत्व और नियंत्रण करने वाला समूह दूसरों पर हावी हो कर रहता है। अल्पसंख्यक नस्ल के लोगों पर अधिकार और नियंत्रण को बनाए रखने की गलती करने की परीक्षा हमेशा बनी रहती है, जिसके कारण उस सच्चे मेल की सम्भावना कम होती है जिसकी अक्सर इच्छा की जाती है। मेल का अर्थ सिर्फ यह नहीं है कि अनेक समुदायों के लोग रविवार की सुबह एक साथ मिलकर चर्च में बैठें। जहाँ दबदबा और नियंत्रण जैसी बातें बनी रहती हैं, वहाँ कभी कोई सच्चा मेल नहीं हुआ। जहाँ इतिहास में अल्पसंख्यक नस्लों का दमन कर अधिकार का दुरुपयोग करते हुए उन्हें कलीसिया में वंचित रखा गया है और मेज़ पर स्थान नहीं दिया गया है, और जहाँ निर्णयों को लेते समय कमजोरों की आवाजों पर ध्यान नहीं दिया गया है, वहाँ कभी कोई सच्चा मेल नहीं हो सकता। जहाँ सबसे कमजोर व्यक्ति की आवाज को प्राथमिकता नहीं दी जाती। जहाँ स्थानीय कलीसियाओं के कान इन आवाजों को विशेष महत्व देने के आदी नहीं है, वहाँ परमेश्वर के राज्य की प्रभुता हमारे बीच अपनी पूर्णता में नहीं।

हमारे अमरीकी ऐनाबैपटिस्ट समुदायों में नस्लभेद को बढ़ावा देने वाले अधिकार के प्रयोग सम्बन्धी क्रिया–कलाप के प्रति गैरजवाबदेही हमारे समाज में नस्लभेद को दृढ़ करने वाली रूकावटी जटिल प्रणाली को भेद पाने की असफलता का सहीं कारण न जान पाने के लिए जिम्मेदार है, और इस क्षेत्र में हमारी मानवीय कमजोरियों के मध्य परमेश्वर की सामर्थ और अधिकार के आगे हमारे समर्पण की गवाही रख पाने से वंचित करती है। हमारे अमरीकी ऐनाबैपटिस्ट समुदायों में, हमें दूसरों पर दबदबा और नियंत्रण रखने की मानसिकता से आगे बढ़ कर अपने आप को शून्य करने वाले भाई चारे और पारस्पारिकता की ओर जाने की आवश्यकता है।

समय आ चुका है कि हम अपने धर्मविज्ञान और दस्तूरों में पाई जाने वाली अनियमिताओं का सुधार हेतु पुर्नावलोकन करें ताकि हम एक नस्लभेदी समाज के बीच मसीह की शिक्षाओं को विश्वासयोग्यता से साकार कर सकें। हमारी ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाएं शायद यह समझ सकने में दूसरों की तुलना में अधिक संवेदनशील है कि हमें दूसरों पर हावी नहीं होना चाहिए या दूसरों पर ''प्रभुता'' नहीं करना चाहिए। तौभी अपनी श्वेत प्रभुत्व वाली और श्वेत नियंत्रित कलीसियाओं के प्रत्युत्तर में इस धर्मविज्ञान को लागू करने की आवश्यकता है।

ऐनाबैपटिस्ट पुस्तकों और पुलपिट से दिए जाने वाले उपदेशों का स्वरूप कैसा होगा जो श्वेत लेखकों और वक्ताओं से प्रभावित हो कर नहीं बल्कि कलीसिया के सारे वरदानों को पूरी तरह से समेट और लागू कर, विशेष रूप से उन लोगों के वरदानों को जो वंचित और दबाए गए लोग हैं, लिखीं और प्रस्तुत किए जाएंगे? हमारी ओर नज़र गड़ाए संसार के सामने हमारी कलीसियाएं किस प्रकार से परमेश्वर के राज्य को दिखा पाएंगी यदि ये कलीसियाएं रचनात्मक रूप से निडर सुधारवादी भविष्यद्वक्ताओं के समान मसीहत की गैर–श्वेत धारा का अनुसरण करेंगी और वर्तमान समय के निर्बलों और बचावहीन लोगों को अपने साथ ले कर चलेंगी?

क्या यह सम्भव है कि नस्लभेद के कारण वंचित किए गए लोगों के साथ प्रतिदिन अपनापन दर्शाते हुए और उनके साथ मिलकर जीवन व्यतीत करने के द्वारा हम अपनी आराधना सहभागिताओं को और समृद्ध बना सकेंगे। वर्तमान का ऐनाबैपटिस्टवाद जिसका आरम्भ सोलहवीं शताब्दी में ऐसे शिष्यों की दृश्य सहभागिता के रूप में हुआ हुआ था जो आर्थिक रूप से शोषित वर्ग के रूप में यीशु की शिक्षाओं का ठोस पालन करने के लिए समर्पित थे, किस तरह से श्वेत प्रभुत्व, नियंत्रण, और ''शासन'' का त्याग करते हुए नए सिरे से तरोताज़ा हो सकता है? ऐनाबैपटिस्टवाद किस तरह से नस्लभेद के शोषित लोगों के साथ अपनापन और भाईचारे को व्यवहार में लागू कर पाएगा? ऐनाबैपटिस्टवाद किस तरह से हमारे मसीही समुदाय के भीतर और बाहर के लोगों का शालोम और उनकी भलाई सुनिश्चित कर सकेगा?

ड्रेव जी आई हार्ट (drewgihart.com) अपने आप को अश्वेत ऐनाबैपटिस्ट कहते हैं, वे मेनोनेड्र्स ब्लाग लिखते हैं और हेरिसबर्ग (पेन्नसिलवेनिया, यूएसए) ब्रदरन इन ख्राइस्ट कलीसिया के भूतपूर्व पास्टर हैं। वे शोध में भी लगे हुए और उनका विषय अश्वेत धर्मविज्ञान और ऐनाबैटिस्टवाद पर केन्द्रित है।

विवेकशीलता और परिवर्तन की बुलाहट

अलग अलग देशों और संस्कृतियों के एमडबल्यूसी अगुवे कोलम्बिया के बगोटा में आयोजित एमडबल्यूसी कार्यकारिणी समिति की बैठकों के दौरान प्रार्थना, बाइबल, अध्ययन और सामूहिक विचार–विमर्श में समय व्यतीत करते हुए। फोटो: विल्हेम अंगर

फर्नांडो एन्रस्

ज, ऐनाबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओं का हमारा समुदाय विश्व भर में फैला हुआ है, और इसमें अनेक सांस्कृतिक, जातीय, और राजनैतिक पृष्ठभूमि के लोग शामिल हैं। निसन्देह, हम असमानताओं वाला एक समुदाय हैं। हम जब कभी इक्कट्ठा होते हैं, इस असमानता और अनेकता का आनन्द उठाते हैं और एक भरपूरी का अनुभव करते हैं।

तौभी, अनेक अवसरों पर कुछ समस्याएं सामने आती हैं और हम खीज उठते हैं। अनेकता एक चुनौती भी है! क्या हमारे विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट घराने में इस अनेकता की कुछ सीमाएं हैं?

इस चुनौती पर चिन्तन करने के लिए, यह आवश्यक है कि हम पहले अपनी पहचान को स्पष्ट करें। यह अपने आप में एक चुनौती है! यदि हमें यह स्पष्ट करने को कहा जाएं कि हम कौन हैं, तो सामान्यत: हम अपने बारे में बताएंगे। हम किन ''कन्धों पर खड़े रहते हैं?'' ऐसे मेनोनाइट समुदाय, जिनकी प्रत्यक्ष जड़ें सोलहवीं शताब्दी के यूरोपीय ऐनाबैपटिस्टवाद में पाई नहीं जाती, वे भी इसी इतिहास का हवाला देंगे, क्योंकि किसी न किसी बिन्दु में वे इस घटना को अपनी पहचान के एक हिस्से के रूप में स्वीकार करते हैं। यदि हम इस इतिहास को आलोचात्मक दृष्टिकोण से भी देखते हों, तौभी हम इसका हवाला देते हैं ताकि हम यह स्पष्ट कर सकें कि हम कौन हैं और पहचान और अनेकता के वर्तमान मुद्दों की दिशा को तय कर सकें।

आरम्भिक ऐनाबैपटिस्टवाद: अनेकता में जन्म

ऐनाबैपटिस्टवाद कभी भी पूर्णत: एकरूप नहीं रहा है। धर्मसुधार के समय इसके आरम्भ से ही ऐनाबैपटिस्ट आन्दोलन में अनेकता एक चुनौती रही है। इस आन्दोलन का आरम्भ कलीसिया के एक नए चेहरे की एकरूप समझ के साथ नहीं हुआ था, बल्कि यह यूरोप की अलग अलग परिस्थितियों में बहुत से संघर्षों और मतभेदों के मध्य हुआ था। धीरे धीरे एकता के सिद्धान्त उभर कर आए जिससे मध्य काल में हावी कलीसिया के विरुद्ध एक दूसरे को मजबूती प्रदान करने का अवसर मिला।

यद्यपि लूथर, केल्विन, और ज़्विंगली जैसे धर्मसुधारकों के प्रमुख विचार से सहमत थे – कि हमने अनुग्रह के द्वारा विश्वास ही से उद्धार पाया है – इन ऐनाबैपटिस्ट लोगों ने कुछ हट कर अधिक सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए कलीसिया को रूढ़िवादी–रीतियों, संस्कारों, और नियमों से चिपके न रहने वाले समर्पित विश्वासियों के एक विश्वासी समुदाय के रूप में समझा। इस विश्वास की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति थी, सिर्फ विश्वासी का बपतिस्मा – यह एक आमूलचूल परिवर्तनवादी कदम था जो एक व्यक्ति द्वारा विश्वास के अंगीकार पर आधारित था और यह स्वयं की इच्छा से होना चाहिए था। उभरते हुए इस समुदाय ने राज्य शासन या कलीसिया के किसी भी अधिकारी को अपनी ओर से विश्वास की व्याख्या करने के लिए गैरअधिकृत माना। बल्कि उन्होंने एक गैर–धर्मतंत्रिक, गैर–अभिषिक्त प्रधान, और गैर–धर्ममतीय आदर्श को अपनाया जिसमें ''सब विश्वासियों को याजक'' माना गया।

जैसे जैसे यह आन्दोलन बढ़ता गया, यह स्पष्ट हो गया कि हमारे लिए सिर्फ सामूहिक तंत्र (कॉन्ग्रिगेशनल सिस्टम) की कलीसिया ही उपयुक्त होगी। ऊपर से नीचे तक, बिशपों और पादरियों के वर्गीकृत नेतृत्व के बिना ही, मण्डली सामूहिक रूप से संयुक्त रूप से बाइबल पठन और वचन के प्रकाश को एक दूसरे के साथ बाँटने के माध्यम से ही परमेश्वर की इच्छा को पहचानेंगे। मसीह के पीछे कैसे चलें – यह पहाड़ी उपदेश में बहुत ही स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है – प्राथमिक रूप से इसी की ओर ध्यान दिया गया।

विवेक और विश्वास के मामले में स्वतंत्रता के इस दावे से कलीसिया और राज्य शासन के तात्कालीन शासकों में हड़कम्प मचना स्वाभाविक था। ऐनाबैपटिस्ट लोगों की पहली और दूसरी पीढ़ी के अनेक लोगों को इस कारण अपनी जान तक गवाँना पड़ा।

अनबन और फूट का इतिहास

ये सारी बातें ऐनाबैपटिस्ट लोगों के रूप में हमारी एक समान कहानी का हिस्सा हैं। यह हमारी पहचान को व्यक्तियों और मण्डलियों के रूप में विभिन्न सन्दर्भों में रूप देती है, साथ ही, यह एक साथ मिलकर एक कलीसिया के रूप में अस्तित्व में रहने का हमारा एक तरीका भी है।

भले ही आरम्भिक ऐनाबैपटिस्ट आन्दोलन ने विभिन्न किन्तु एक दूसरे के पूरक विचार वालों व्यक्तियों और समूहों को एक जाल में बुना कि किस तरह से मसीही विश्वास को व्यवहार में लाया जाए, तौभी मतभेद आ ही गए। अनबन और फूट भी हमारी कहानी का एक हिस्सा हैं – ये हमारी कहानी के ऐसे कठिन भाग हैं जिनसे अब तक हमारा सामना

होता रहता है। यदि हम इस पर चिन्तन करें तो यह पाएंगे कि इस प्रकार के अनबन विश्वास के उन दावों से मेल नहीं खाते हैं जो हमारे आरम्भिक भाइयों और बहनों द्वारा किए गए थे।

उदाहरण के लिए, बपतिस्मा देते समय पानी की मात्रा कितनी होना चाहिए या आराधना–सभाओं में किस प्रकार का संगीत बजाना चाहिए जैसी बातें अपना अलग रास्ता चुनने और एक दूसरे की आलोचना करने का कारण बनने लगी। पुरुष प्रधानता, अभिषिक्तों की प्रधानता, शक्ति का दुरुपयोग, व्यक्तिगत रूप से सताया जाना और सारे के सारे समूह पर ''कुपंथ'' (झूठी शिक्षा देना वाला समूह) होने का कलंक लगना भी हमारे इतिहास का हिस्सा वैसे ही हैं जैसे कि अन्य कलीसियाओं का।

आरम्भिक ऐनाबैपटिस्ट लोगों के द्वारा सिखाई गई बाइबल की अनमोल शिक्षाओं केअनुरूप जीवन व्यतीत न कर पाना एक मोह–भंग करने वाला अनुभव हो सकता था। भले ही हम लगातार यह दावा करते हैं, जैसा कि हमारे संस्थापकों ने किया था, कि कलीसिया व्यवहार और प्रशासन के लिए विश्वासी को ही बपतिस्मा देने की शिक्षा और सामूहिक तंत्र को ही केन्द्र बनाए जाने पर कलीसिया के भीतर अनेकता की सबसे अधिक सम्भावना बनती है – क्योंकि यह विचार एक व्यक्ति पर सर्वाधिक भरोसा रखता है और उसे सर्वाधिक सम्मान देता है – ऐसा लगता है कि हम इस दावे को उचित सिद्ध कर पाने और व्यवहार में लाने में लगातार असफल हुए हैं।

वर्तमान ऐनाबैपटिस्टवाद में अनेकता

धर्मसुधार में भाग लेने वाली सारी कलीसियाओं के समान ही यही दृढ़ धारणा हमारी एक और पहचान है कि कलीसिया एक सेन्पर रिफार्मान्डा है, अर्थात्, इसे निरन्तर सुधार की आवश्यकता है। हमें यह स्वतंत्रता है और साथ ही यह हमारी जिम्मेदारी भी है कि हर एक पीढ़ी में हम कलीसिया को नया बनाएं, यदि यह नए विचारों की दृष्टि से आवश्यक और उपयुक्त प्रतीत हो।

आज, हम अपने आप को ऐनाबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओं के एक विश्वव्यापी समुदाय के रूप में पाते हैं, जिसे हम मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस कहते हैं। यहीं हम अनेकता का सम्मान करना और इसे महत्व देना सीखते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ, बहुआयामी जातीय पहचान, प्रासंगिक (सन्दर्भ के दृष्टिकोण से) बाइबल अध्ययन व धर्मविज्ञान और परमेश्वर के प्रेम का विभिन्न रूपों में सहीं तरीकें से आनन्द उठाना, यह सब मिलकर इस समुदाय की समृद्धि का कारण बनती हैं। हमने इस अनेकता को परमेश्वर की एक भेंट के रूप में ग्रहण करना सीखा है, चूंकि अब हम पहले की तुलना में अधिक अच्छे से यह समझते हैं कि अनेकता और एकता परमेश्वर की एक सृजनात्मक गति के परस्पर विरोधी नहीं किन्तु पूरक पहलू हैं। एमडबल्यूसी वह पहला स्थान है जहाँ हम इस समृद्धि के लिए एक साथ मिलकर धन्यवाद देते हैं और इसका आनन्द उठाते हैं।

किन्तु, एक जोखिम यह होता है कि हमारा यह आनन्द उत्सव सतही हो कर रह जाए यदि हम एक पर्यटक का रवैया रखते हुए इसमें भाग लेते हैं – यह एक ''निम्न स्तर की एकता'' है। जब तक विश्वव्यापी घराने की अनेकता स्थानीय कलीसियाओं में हावी अधिकारों को चुनौती न दे, तब तक सब प्रकार के मतों को स्वीकार कर लेना काफी सरल होगा।

क्या हम विश्वव्यापी घराने में पाए जाने वाले अन्य लोगों को इस बात के लिए अनुमति देंगे कि वे हमारी पारम्परिक धारणाओं को चुनौती दें? क्या हम दूसरों को बर्दाश्त करने (उनका बोझ उठाने) के लिए सचमुच में तैयार है? क्या हम सचमुच में अपनी किसी ऐसी धारणा या अपने किसी आचरण में बदलाव लाएंगे, जिससे किसी को ठेस पहुँच रही हो?

मैं एमडबल्यूसी को एक ऐसे स्थान के रूप में भी देखता हूँ जहाँ हम एक साथ इकट्ठे हो कर अपनी अनेकता की सीमाओं को पहचान सकें, एक ऐसा स्थान जहाँ हम एक दूसरे को जवाबदेह ठहरा सकें। यह कार्य कुछ अवसरों पर कठिन, हताशाजनक, और पीड़ादायक भी हो सकता है। तौभी, यदि हम इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं, तो हम मसीह में विश्वास का एक सच्चा समुदाय बनने के लिए आवश्यक कुंजी से चूक जाएंगे: ''एक महंगी एकता।''

अनेकता को व्यवहार में लाना

अवश्य ही, ऐसी भावनाएं – यद्यपि गूढ़ हैं – व्यवहारिक होना भी आवश्यक है। आज हम अनेकता की जटिलताओं को चीरते हुए किस प्रकार से आगे बढ़ सकते हैं? दूसरे शब्दों में, हमारी अनेकता की सीमाओं को आपस में

''आराधना करने वाला समुदाय, जो परमेश्वर के नाम से एकत्रित होता है, परस्पर जवाबदेही का अन्तिम और निर्णयाक स्थान बना रहेगा। मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस में इस प्रकार का एक समुदाय बनने की क्षमता और सम्भावना है।''

पहचानने के बाद इस प्रक्रिया को व्यवहार में किस तरह से अपनाएंगे? हम एक दूसरे को किस तरह से जवाबदेह ठहराएंगे?

ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, दो परस्परसम्बन्धित प्रश्नों को सामने रखना सहायक हो सकता है?

कौन कौन से मुद्दे एकता के लिए खतरा हैं?

हम उन मुद्दों को किस प्रकार से तय करते हैं जिन पर हमें एक साथ खड़े रहना अनिवार्य है? पुराना नियम के भविष्यद्वक्ताओं के लिए, अनेकता या असमानता तब अपनी हद पर पहुँच जाती थी जब कोई दृढ़ धारणा या आचरण ईशनिन्दा का कारण बन जाती थी। जब कभी कोई उस एकमात्र परमेश्वर – जिसने इस्राएल को बन्धुआई और गुलामी से मुक्त किया था – की एकता और अद्वितीयता पर सन्देह करता था, तब भविष्यद्वक्ता एक स्पष्ट अंगीकार के लिए आव्हान करते थे। नया नियम में भी यही बात लागू होती है: जब कभी प्रभु यीशु मसीह के प्रभु होने पर सन्देह किया गया, तो सहनशीलता कभी भी एक विकल्प नहीं बन सकी।

धर्मविज्ञान की भाषा में, इस तरीके को स्टेटस कन्फेशनिस कहा जाता है, एक ऐसी स्थिति जब मसीह के प्रति अंगीकार ही संकट में हो। ऐसा ही उस समय हुआ था जब बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जर्मन के मसीही लोग नाज़ी शासन के परम अधिकार के दावों के आगे झुक गए, यहाँ तक कि कलीसिया के मामलों में भी नाज़ी शासन सर्वेसर्वा स्वीकार कर लिया गया। इसके विरोध में, उभरती हुई ''अंगीकार करने वाली कलीसिया'' ने बारमेन (1934) में एक धर्मवैज्ञानिक विज्ञप्ति जारी किया, जिसमें जर्मन के मसीहियों द्वारा नाज़ी विचारधारा के प्रति जताई जा रही मौन सहमति की निन्दा की गई और यह अंगीकार किया गया कि यीशु मसीह ही कलीसिया के एकमात्र सिर के रूप में हटाया न जा सकने वाला इसका प्रभु और स्वामी है

एकता पर खतरा बने इन मुद्दों से हम कैसे निपट सकते हैं?

आज, मेनोनाइट लोगों को शान्ति की पक्षधर ऐतिहासिक कलीसियाओं में से एक माना जाता है और इस कारण उन्हें बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। कलीसिया के भीतर अनेकता की चुनौतियों का सामना करने में, विवादों को सुलझाने का यह अहिंसक तरीका ऐनाबैपटिस्ट आन्दोलन के आरम्भ से ही एक प्रमुख सिद्धान्त रहा है। तौभी जब आन्तरिक विवादों की बात आती है, निश्चय ही अब भी हम मध्यस्थता में निपुणता का दावा नहीं कर सकते। तौभी मैं अपनी इस खासियत में निहित बुद्धिमत्ता और क्षमता पर विश्वास करना पसन्द करता हूँ। यदि हम अपनी इस प्रमुख धारणा और विश्वास पर दृढ़ रहें कि यीशु ने अपने सारे चेलों को मेल कराने और पहले उसके राज्य के धर्म की खोज करने को बुलाया है, तो न्यायप्रिय शान्ति की कलीसिया के रूप में हमारी यह विशेषता पहले हमारे स्वयं के मतभेदों को सुलझाने में हमारे तरीकों को स्पष्ट करे।

किसी भी विवाद की स्थिति में सबसे पहले इन प्रश्नों को सामने लाया जाना चाहिए:

– हम जिस विषय पर विवाद कर रहे हैं, क्या उससे मसीह के प्रति हमारे अंगीकार पर प्रभाव पड़ रहा है, या क्या हम यह बर्दाश्त कर सकते हैं कि दूसरा जिस बात को कह रहा है उसका आधार वह पवित्रशास्त्र को बना रहा है और कह रहा है कि पवित्रशास्त्र उससे यही कहता है?

– इस मद्दे में सबसे कमजोर और भेदभाव पीड़ित व्यक्तियों का दृष्टिकोण क्या है?

– क्या हम इस विवाद के द्वारा किसी पर अत्याचार कर रहे हैं और, यदि कर रहे हैं, तो हम किस तरह से इस अत्याचार को समाप्त कर सकते हैं?

– क्या हम गलत तरीके से अपने आप को पीड़ित या आहत व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं और, यदि कर रहे हैं, तो किस प्रकार से हम अधिक उपयुक्त तरीका अपना सकते हैं?

– क्या हम इस सच्चाई का आदर कर रहे हैं कि इस मुद्दे में शामिल हर व्यक्ति अविनाशी रूप से परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है, भले ही हमारे विचार या आचरण में भिन्नता हो?

मैं ऐसा विश्वास करता हूँ कि एक न्यायप्रिय शान्ति की पक्षधर कलीसिया को एक अत्यंत नम्र तरीका अपनाना चाहिए: हम हमेशा उस परम सत्य जो सिर्फ परमेश्वर में पाया जाता है, और उस सत्य से प्राय: मिलते जुलते सारे सत्यों के बीच के अन्तर को ध्यान में रखें। यदि हम अपनी कलीसिया को एक न्यायप्रिय शान्ति की कलीसिया बनाने की आकांक्षा में इस नम्रता को भी जोड़ देंगे, तो न सिर्फ हमारी शान्ति की गवाही की विश्वसनीयता बढ़ेगी बल्कि हम अपनी अनेकताओं को बर्दाश्त कर पाने (का बोझ उठाने) में मसीही की क्षमता के नएपन को भी खोज सकेंगे।

आराधना करने वाला समुदाय, जो परमेश्वर के नाम से एकत्रित होता है, परस्पर जवाबदेही का अन्तिम और निर्णयाक स्थान बना रहेगा। एमडबल्यूसी में इस प्रकार का एक समुदाय बनने की क्षमता और सम्भावना है।

फर्नांडो एन्नस् यूनिवर्सिटी ऑफ हैमबर्ग (जर्मनी) में इन्सटिट्यूट फॉर पीस चर्च थियोलॉजी के निदेशक और फ्री यूनिवर्सिटी ऑफ एम्सटरडम (नीदरलैण्ड) में (थियोलॉजी एण्ड इथिक्स) प्रोफेसर हैं।

पेन्नसिलवेनिया 2015 की एक झलक

पंजीकरण का आरम्भ अगस्त 20, 2014 से

सम्मेलन का फैलाव (असेम्बली स्केटर्ड)
मुख्य सम्मेलन से पहले व बाद उत्तरी अमरीका के विभिन्न स्थानों में

ग्लोबल यूथ समिट
17–19 जुलाई 2015, मसायाह कॉलेज, मेकेनिक्सबर्ग, पेन्नसिलवेनिया
प्रमुख विषय: बाँटने के लिए बुलाहट: मेरे वरदानों को, हमारे वरदानों को

मुख्य सम्मेलन
21–26 जुलाई 2015, हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए
प्रमुख विषय: वॉकिंग विथ गॉड (परमेश्वर के साथ साथ चलना)

फोटो: मर्लिन गुड

कार्यक्रम के आकर्षण
सुबह के समय एक अन्तर्राष्ट्रीय क्वायर की अगुवाई में गीतों के द्वारा हम परमेश्वर की स्तुति करेंगे और फिर छोटे छोटे समूहों में बंट कर सुबह के प्रमुख विषय पर चर्चा और प्रार्थना करेंगे।
दोपहर के समय, प्रतिभागियों को विकल्प चुनने का अवसर मिलेगा, और वे कार्यशालाओं, सेवा–परियोजनाओं, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भ्रमण, शॉपिंग, या खेलकूद (मेनोनाइट वर्ल्ड कप भी होगा!) में से अपने मन से किसी का भी चुनाव कर सकते हैं। ग्लोबल चर्च विलेज़ हर दोपहर खुला रहेगा, जिसमें कलीसिया और संस्कृति सम्बन्धी प्रदर्शनी, वैश्विक संगीत, और कला–सम्बन्धी प्रदर्शनी रखी जाएगी।
संध्या की आराधना के समय गीत, वक्ताओं द्वारा मनन, प्रार्थना, एक दूसरे को सुनने, एक दूसरे के साथ अपने वरदानों को बाँटने, और एक दूसरे को उत्साहित करने का अवसर होगा।

बच्चों और युवाओं के लिए
सुबह की आराधना के बाद, 4–11 वर्ष के बच्चें अलग अलग संस्कृति के बच्चों के साथ मिलकर विशेष कार्यक्रम में भाग लेंगे और दोपहर का भोजन भी साथ करेंगे, संध्या आराधना और रात्रिभोज में वे वयस्कों के साथ शामिल होंगे। 12–17 वर्ष के युवा सुबह के गीत –संगीत के बाद अलग से उनके लिए तैयार किए गए विशेष कार्यक्रम में भाग लेंगे, साथ ही देर रात भी मसायाह कॉलेज में ठहरे युवाओं के साथ विशेष कार्यक्रमों में भाग लेंगे।

पंजीकरण
पंजीकरण: 75 – 465 यूएस डॉलर, भोजन और परिवहन शुल्क अतिरिक्त (वालेन्टियर्स और परिवारों के लिए विशेष छूट)
ठहरने की व्यवस्था: 25–159 यूएस डालर प्रति रात्रि

वीसा
यदि आपको यूएसए में प्रवेश पाने के लिए वीसा की आवश्यकता हो, तो कृपया अतिशीघ्र रजिस्ट्रेशन करवाएं। वीसा प्राप्त करने के लिए आपको आपकी स्थानीय कलीसिया से एक सिफारिश पत्र की आवश्यकता होगी और वीसा प्रक्रिया के सम्बन्ध में आपको एमडबल्यूसी से अतिरिक्त जानकारियाँ दी जाएंगे।

यात्रा
सबसे नज़दीक और सबसे सुविधाजनक हवाई अड्डा हेरिसबर्ग अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (एमटीडी) है, साथ ही साथ, फिलाडेलफिया (पीएचएल) और बाल्टमोर वाशिंगटन (बीडब्यूआई) के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों से भी आगमन के विशेष समयों पर बसों का संचालन किया जाएगा। हेरिसबर्ग तक आने के लिए फिलेडेलिफिया और न्यूयार्क सिटी से ट्रेनों की बहुत अच्छी सुविधा है।

भ्रमण
जुलाई 20 को, न्यूयार्क सिटी, फिलेडेलफिया, वाशिंगटन डी.सी. और अनेक ऐनाबैपटिस्ट समुदायों में एकदिवसीय

ग्लोबल यूथ समिट
जीवायएस का प्रमुख विषय होगा, ''बाँटने की बुलाहट: मेरे वरदानों को, हमारे वरदानों को'' आराधनाएं, कार्यशालाएं, खेलकूद, और बहुत सी मनोरंजक गतिविधियाँ।
पंजीकरण शुल्क: 265 यूएस डालर (उत्तरी देशों के लिए) और 57 यूएस डालर (दक्षिणी देशों के लिए) भोजन खर्च सम्मिलित।

सम्मेलन का फैलाव (असेम्बली स्केटर्ड)
मुख्य सम्मेलन (असेम्बली गैदर्ड) से पहले और बाद में असेम्बली स्केटर्ड का अयोजन किया जा रहा है। आप न्यूयार्क, फिलाडेलफिया, वाशिंगटन डी.सी., मियामी, अलास्का, और अनेक स्थानों की स्थानीय कलीसियाओं में मुलाकात करने के लिए जा सकते हैं। इच्छुक प्रतिभागी यात्रा का प्रबन्ध स्वयं करेंगे, तथा भोजन और ठहरने का व्यय भी स्वयं वहन करेंगे।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस
पोस्ट बॉक्स 5364
लेंकास्टर, पेन्नसिलवेनिया, 17606–5364
Pennsylvania2015@mwc-cmm.org

Pennsylvania 2015

News Noticias Nouvelles
Courier Correo Courier

October 2014
Volume 29, Number 5

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

Congreso Mundial Menonita
A Community of Anabaptist related Churches

Conference Mennonite Mondiale
A Community of Anabaptist related Churches

समाचार संक्षेप

बगोटा, कोलम्बिया में, कलीसिया के सदस्यों ने उनके देश में अनिवार्य कर दी गई सैन्य सेवा के विरुद्ध कॉन्शियस आबजेक्टर स्टेटस के अधिकार का दावा करते हुए रैली निकाली। फोटो: जस्तापाज़

कोलम्बियाई शान्ति समूह द्वारा विवेककी आवाज़ सुन कर चलने वाले दक्षिण कोरिया के आपत्तिकर्ता को सहयोग

बोगाटा, कोलम्बिया – जेनी नेम, कोलम्बिया की मेनोनाइट संस्था जस्तापाज़ (जस्ट पीस/न्यायप्रिय शान्ति) की निदेशक हैं, इनके लिए दक्षिण कोरिया के सैंग–मिन ली, जो विवेक की आवाज सुन कर आपत्ति करने वालों में से एक हैं, को सहयोग देना एक सहज बात थी। वे कहती हैं, ''उन स्थानों में जहाँ हम एकत्र होते हैं, भविष्यद्वक्ता के समान परमेश्वर की आवाज को वचन और अपने जीवन के द्वारा संसार तक पहुँचाने की कलीसिया की भूमिका पर आधारित भाईचारे और परस्पर सहयोग स्थापित करने के प्रयास में, . . . कलीसियाओं को अनेक विभिन्न परिस्थितियों में राज्य की राजनीति में अपना पक्ष रखने के लिए उत्साहित करने के प्रयास में'' इसका उदय हुआ।

जस्तापाज़ लगभग 25 वर्षों से कॉनशियस ऑब्जेक्शन (सीओ) – अर्थात्, विवेक की आवाज सुन कर आपत्ति करना – से सम्बन्धित मुद्दों पर कार्य कर रही है, और देश भर के उन युवाओं को उत्साहित कर उनका सहयोग कर रही है जो अपने विश्वास के कारण कोलिम्बिया सरकार द्वारा उन पर अनिवार्य रूप से थोपी जाने वाली सैन्य सेवाओं में जाने से इंकार कर देने का निर्णय लेते हैं। जस्तापाज़ संस्था सीओ का अधिकार (विवेक की आवाज़ सुन कर आपत्ति करने का अधिकार) कोलम्बिया के कानून में शामिल करने की भी वकालत करती है। यह संस्था कार्यशालाओं, धर्मविज्ञान प्रशिक्षण और सहयोगियों के साथ गठबन्धन बनाने के द्वारा अहिंसक शान्ति–स्थापना को सैन्य सेवा के एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करती है।

किन्तु मार्च 2014 को हॉलैण्ड में आयोजित मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के पीस कमिशन की बैठक से पहले ऐसा कुछ नहीं हुआ था, इसी बैठक में जेनी नेम ने ग्रेस एण्ड पीस मेनोनाइट चर्च, सियोल, दक्षिण कोरिया के 27 वर्षीय सदस्य सैंग–मिन ली के मामले के विषय में सुना। ली दक्षिण कोरिया के पहले मेनोनाइट हैं जिन्होंने अपने आप को विवेक की आवाज सुन कर आपत्ति करने वाला एक सीओ घोषित किया और इस समय वे एक जेल में है क्योंकि उन्हें 18 महीनों की सजा सुनाई गई है। विश्व भर में बन्दी बनाए गए सीओ में से लगभग 98 प्रतिशत दक्षिण कोरिया में हैं।

ली की कहानी को सुनने के बाद जेनी नेम और जस्तापाज़ ने इस सीओ की गवाही को कोलम्बिया के मेनोनाइट लोगों को सुनाया। अनेक व्यक्तियों और कलीसियाओं ने यह संकल्प लिया है कि वे ली को उत्साहित करने के लिए पत्र लिखते रहेंगे और उनके लिए प्रार्थना करेंगे। जेनी नेम बताती हैं कि ऐसी प्रतिक्रिया का एक बड़ा कारण यह भी है कि इन लोगों को भी ली से मिलते जुलते अनुभवों का सामना करना पड़ा है। वे कहती हैं, ''कोलम्बिया में भी ऐसा हमारे साथ हो सकता है,

शेष पृष्ठ ii में

पेन्नसिलवेनिया 2015 सम्मेलन की नवीनतम खबर

2015 सम्मेलन के ठीक एक वर्ष पूर्व आरम्भ के पूर्वसूचक उत्सव

हैरिसबर्ग और माउन्ट जॉय, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए –

पूर्वी पेन्नसिलवेनिया के मेनोनाइट और ब्रदरन इन ख्राइस्ट कलीसियाओं ने मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के अगुवों का 20 जुलाई, रविवार को आरम्भ के दो पूर्वसूचक उत्सवों में बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया, यह 21–26 जुलाई 2015 तक पेन्नसिलवेनिया में आयोजित होने वाले एमडबल्यूसी सम्मेलन के ठीक एक वर्ष पहले का समय था।

एक कार्यक्रम सुबह के समय हैरिसबर्ग ब्रदरन इन ख्राइस्ट कलीसिया में आयोजित किया गया। दोपहर का कार्यक्रम माउन्ट जॉय मेनोनाइट चर्च में आयोजित किया गया।

एमडबल्यूसी के जनरल सेक्रेटरी सीज़र गार्सिया ने सम्मेलन के मूल विषय को सबके सामने रखा, ''वॉकिंग विथ गॉड'' (परमेश्वर के साथ साथ चलना) उन्होंने बताया कि यह मूल विषय इम्माउस के मार्ग पर हुई घटना को आधार बना कर चुना गया गया है, जिसमें ऐसा लगता है कि चेले वाद विवाद तो कर रहे थे, परन्तु वे साथ साथ भी चल रहे थे। ''जब वे मेज़ पर बैठे, और एक साथ सहभागिता की, तभी वे यह जान पाए कि यीशु कौन था। जब हम एक साथ सहभागिता करते हैं, हम विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हैं। और हम यीशु को एक नये रूप में पहचान पाते हैं।''

गीत लेखक फ्राँसिस क्रोहिल मिलर और डेरिल स्निडर ने संगीत अगुवा मार्सि होस्टलर के साथ मिलकर लगभग 300 श्रोताओं के सामने अन्तर्राष्ट्रीय गीतों को प्रस्तुत किया।

भारत के विकल प्रवीण राव ने, जो असेम्बली प्रोग्राम कमेटी के एक सदस्य हैं, लोगों के सामने ग्लोबल चर्च विलेज़ की एक झलक प्रस्तुत किया। ग्लोबल चर्च विलेज 2015 सम्मेलन स्थल हेरिसबर्ग के फार्म शो कॉम्पेक्स में प्रस्तुतिकरण का एक स्थान होगा। जोआन डेयट्ज़ल ने, जो मेजबान समूहों में से एक मेनोनाइट चर्च यूएसए के एक सदस्य हैं, प्रेयर नेटवर्क के विषय में बताया।

कुछ दिनों पहले, एमडबल्यूसी ने लेनकास्टर कन्ट्री में, मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी यूएसए के एक्रोन पेन्नसिलवेनिया मुख्यालय में अपना एक कार्यालय खोला है।

शेष पृष्ठ iv में

एमडबल्यूसी के अगुवे अगले सम्मेलन, पेन्नसिलवेनिया 2015 के ठीक एक वर्ष पहले आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लेते हुए; बाएं से दाएं: सीज़र गार्सिया, एमडबल्यूसी जनरल सेक्रेटरी; लिसा अंगर, अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन संयोजन; और विकल प्रवीण राव, 2015 सम्मेलन की योजना समिति के सदस्य। फोटो: मेरिल गुड

पृष्ठ i से आगे

कि हमारे युवाओं में से किसी एक को जेल जाना पड़ जाए, साथ ही, हम इस बात के गवाह भी है कि जब कभी हमें हमारे भाइयों और बहनों की ओर से तत्काल सहयोग की आवश्यकता महसूस हुई, तो यह हमें मिला।''

हालैण्ड में हुए वार्तालापों और ली के मामले में मिली प्रतिक्रियाओं के परिणामस्वरूप, जस्तापाज़ कुछ संगठनों के साथ अमरीका, जर्मनी और दक्षिण कोरिया में तैयारियाँ कर रहा है ताकि हैरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में जुलाई 2015 को होने वाले एमडबल्यूसी सम्मेलन में कॉन्शियन्स आब्जेक्शन पर कुछ कार्यशालाएं आयोजित की जा सके। इन कार्यशालाओं में ऐतिहासिक और धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस विषय पर चिन्तन किया जाएगा, साथ ही कॉनशियस आब्जेक्शन की वास्तविकताओं पर वर्तमान दृष्टिकोण से भी अध्ययन किया जाएगा, इसके पीछे यह उद्देश्य होगा कि विश्व भर के ऐनाबैपटिस्ट लोगों पर उनके दैनिक जीवन में इस मुद्दे से पड़ने वाले प्रभावों को ध्यान में रखते हुए आपसी भाईचारे और सहयोग का एक विश्वव्यापी वातावरण तैयार किया जा सके।

जेनी नेम के अनुसार, कॉनशियस आब्जेक्शन '' विश्वव्यापी (ऐनाबैपटिस्ट समुदाय) के सामने एक चुनौती रखता है कि इस विषय के मूल्यों की ओर लौट चलें – एक ऐसा विषय जो हमारे विश्वास की परम्परा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।''

– एन्ना वोग्ट, जस्तापाज़

उत्तरी अमरीका की मण्डली भिन्न भिन्न संस्कृतियों की कलमों को एक जड़ में साटती है

अपलैण्ड, कैलिफोर्निया,

यूएसए – प्रवासियों से मिल कर बनी किसी अन्य मण्डली को एक गहरी जड़ वाले मेनोनाइट समुदाय में साटना या रोपित करना एक कठिन काम है। परन्तु पास्टर नेहमायाह शिगोज़ी – जो नाइज़ीरिया में पले–बढ़ें – ऐसा मानते हैं कि दो मण्डलियों, मेनोनाइट अपलैण्ड और गेरजा क्रिस्तुस इन्जिलि (जीकेआई) अपलैण्ड का अपलैण्ड पीस चर्च के नाम से एक नए अस्तित्व के रूप में विलय फलदायक सिद्ध होगा।

ये दो मण्डलियाँ, जो कि एमडबल्यूसी की एक सदस्य कलीसिया पेसेफ़िक साऊथवेस्ट मेनोनाइट कॉन्फ्रेंस ऑफ मेनोनाइट चर्च यूएसए की अंग हैं, वर्षों से मुख्य उत्सवों के अवसर पर साथ एकत्रित होती रही हैं।

शिकोंजी बताते हैं, जब जीकेआई – मुख्यत: इण्डोनेशिया के प्रवासियों से बनी एक मण्डली – कुछ वर्ष पूर्व फर्स्ट मेनोनाइट मण्डली के भवन में आराधना के लिए जाने लगी, तब वास्तव में उनकी योजना यह थी कि वे अलग अलग कक्षों में आराधना करेंगे। परन्तु किन्हीं कारणों से ऐसा करना उचित नहीं लगा, चूंकि वे एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो एक साथ संगति करने की चाह रखने लगे थे। इसलिए प्रयोग के तौर पर उन्होंने एक साथ एक ही आराधना में भाग लेने का निर्णय लिया जिसमें इण्डोनेशियाई भाषा में अनुवाद किया जाता था – और फिर बाद में उन्होंने युवा पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए सिर्फ अंग्रेजी भाषा में ही आराधना संचालित करने का निर्णय लिया।

अपलैण्ड पीस चर्च के पास्टर नहेमायाह शिकोज़ी (मध्य में) एक आराधना सभा के दौरान गिटार बजा कर गीत गाते हुए। दाईं ओर अंकलुंग रखा हुआ है, यह इण्डोनेशिया का एक वाद्य यंत्र है। फोटो: डोरिन मार्टेंस

जीकेआई ''अपने बच्चों को अमरीकी मण्डलियों में खो दे रही थी क्योंकि वे इण्डोनेशियाई संस्कृति की आराधना में जुड़ना नहीं चाह रहे थे; परन्तु उन्होंने ऐसा अनुभव नहीं किया,'' शिकोजी पुरानी बातों को याद करते हुए कहते हैं, ''यहाँ आने पर, उन्होंने पाया कि यह एक ऐसा घर है जिसके साथ वे अपना सम्बन्ध जोड़ सकते हैं।'' बच्चे मेनोनाइट कलीसिया में ही बने रह सकते हैं, परन्तु भाषा में मामले में अधिक कुछ न कर सके और यही तय हो पाया कि आराधना अंग्रेजी में ही संचालित की जाएगी।

2013 में, दोनों मण्डलियाँ अधिकारिक रूप में विलय के लिए तैयार हो गईं, इसके साथ ही कलीसिया का नाम बदलने का भी निर्णय लिया गया – ताकि हर सदस्य को अपनेपन का अहसास हो। 60 से भी अधिक सुझावों पर विचार करने के बाद, उन्होंने इस एक नाम को चुना: अपलैण्ड पीस चर्च।

नये संविधान और विधियों को तैयार कर फरवरी 2014 को अन्तिम रूप दिया गया, और इसी दिन एक नई कलीसिया का जन्म हुआ।

अपलैण्ड पीस चर्च, अब पुनर्रचना और मिश्रण का एक ऐसा भव्य स्थान बन गई है जिसमें इण्डोनेशियाई, चीनी, मेक्सिकन, नाइजीरियाई, डच, और पोलिश शामिल हैं।

शिकोज़ी ही एकमात्र वैतनिक पास्टर हैं, और जीकेआई के अगुवे यूसाक और रीना कुसुमा, माथिल्डा कोइशादी और स्लामेट मुस्तानगिन पासवान दल के रूप में उनकी सहायता करते हैं।

इण्डोनेशियाई समूह ने इस मिश्रण में अपना जो योगदान दिया वह यह था कि उन्होंने आराधना के ठीक बाद साथ भोजन करने की आदत डलवाया, लोग पारी पारी से भोजन तैयार करते हैं।

शिकोज़ी यह स्वीकार करते हैं कि यह विलय बिना किसी अड़चन के नहीं हुआ, यहाँ तक उन्हें कुछ बहुत पुराने सदस्यों को भी खोना पड़ गया। उन्हें यह बहुत अच्छा लगा जब पड़ोसी कलीसियाओं के सदस्य कुछ महिनों पहले मण्डली की सहायता करने को आगे आए ताकि यह अपने पैरों पर खड़ी हो सके, उदाहरण के लिए, गीत–संगीत की सेवकाई में सहायता करने के द्वारा। आगे की राह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है, परन्तु फल लाना – समुदाय तक पहुँच कर विश्वास की अगली पीढ़ी तैयार करना – प्राथमिकता होगी।

– मेनोनाइट वर्ल्ड रिव्यू के लिए डोरिन मार्टिन्स के लेख का रूपान्तर।

पुलिस द्वारा वियतनाम में मेनोनाइट चर्च की सभा पर आक्रमण

वियतनाम – पुलिस सुरक्षा बल ने हो छी मिन्ह शहर के ठीक उत्तर में स्थित एक प्रांतीय नगर में बड़ी संख्या में अपने चर्च सेन्टर में एकत्रित पास्टरों और बाइबल कॉलेज़ के विद्यार्थियों पर हमला कर दिया। यह हमला धर्मविज्ञान प्रशिक्षण कार्यक्रम के विद्यार्थियों के दीक्षांत समारोह और जाग्रति सभा के दौरान संध्या के समय हुआ।

इव्हेंजलिकल मेनोनाइट चर्च ने, जो वियतनाम में अधिकारिक रूप से पंजीकृत नहीं है, 9–11 जून 2014 को बिन्ह डोन्ग प्रांत के बेन कैट टाऊन स्थित अपने चर्च सेन्टर में एक सभा का आयोजन किया था, यह स्थान हो छी मिन्ह के उत्तर में बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले अधिकांश पास्टरों का आगमन हो चुका था।

जब सब लोग रात के समय आराम करने के लिए फर्श पर बिछाए गए चटाइयों पर लेटे हुए थे, तभी पुलिस ने ध्वनिविस्तारकों का उपयोग करते हुए यह आदेश दिया कि ''प्रशासनिक जाँच'' के लिए द्वार खोले जाएं। कुछ ही मिनट बाद, पुलिस सुरक्षा बल ने फाटक को तोड़ दिया। बड़ी संख्या में वर्दीधारी और सादे कपड़ों में लोग भवन में टूट पड़े, और विद्यार्थियों और कलीसियाई अगुवों पर हमला कर लिया। 76–76 लोगों के समूह बना कर दो दो पुलिसकर्मियों की निगरानी में बाहर ठहराए गए ट्रकों में बैठा दिया गया और फिर उन्हें जेल में डाल दिया गया।

पास्टर नगुएन होंग क्वांग, जो कलीसिया के भूतपूर्व अध्यक्ष और चर्च के प्रशिक्षण कार्यक्रम के वर्तमान प्रमुख है, द्वारा दी गई विस्तृत रिर्पोट के अनुसार हमला करने वाले पुलिसकर्मियों ने कोई गिरफ्तारी वारंट नहीं दिखाया और न मारने और गिरफ्तार करने का कोई कारण बताया। लोगों को गाड़ी में लाद कर ले जाने के बाद, विभिन्न पुलिस एजेन्सियों के अधिकारियों ने परिसर की तलाशी ली और कुछ सम्पत्तियों को नष्ट भी कर दिया।

यद्यपि बाद में कलीसिया के सभी सदस्यों को रिहा कर दिया गया, परन्तु इस छापामार कारवाई के कई दिनों बाद तक अनेक गुटों के लोग भवन पर ईंट, पत्थर, और सड़े अण्डे फेंक कर हमला करते रहे।

धार्मिक समूहों के लिए यह आवश्यक है कि स्थानीय प्रशासनिक

शेष पृष्ठ iv में

आप एमडबल्यूसी को निम्नलिखित योगदान दे सकते हैं!

आपकी प्रार्थनाएं और आर्थिक भेंट सराहनीय हैं। आपके योगदान हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनके द्वारा:

- विश्वास के विश्वव्यापी घराने के पोषण व प्रोत्साहन के लिए संवाद की विस्तृत योजनाओं को रूप दिया जा सकता है।
- ऐनाबैपटिस्ट मसीहियों के रूप में अनेकता के सन्दर्भ में हमारी सहभागिता की गवाही और पहचान को दृढ़ किया जा सकता है।
- नेटवर्क और सम्मेलनों के माध्यम से समुदाय का विकास किया जा सकता है ताकि हम एक दूसरे से सीख सकें और एक दूसरे की सहायता कर सकें।

mwc-cmm.org में जा कर प्रार्थनों निवेदनों के लिए "Get Involved" और विभिन्न तरीकों से ऑनलाइन भेंट भेजने के लिए "Donate" क्लिक करें। या अपनी भेंटें मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस को निम्नलिखित में से किसी एक पते पर भेंजे:

- PO Box 5364, Lancaster, PA 17606 USA
- 50 Kent Avenue, Kitchener, ON N2G 3R1 Canada
- Calle 28A No. 16-41 Piso 2, Bogota, Colombia
- 8 rue du Fosse des Treize, 67000 Strasbourg, France

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के विषय में

यामेन! की प्रतिभागी रूत अरसारी अपनी मेज़बान माता, लेटिशिया स्टकी के साथ। फोटो रूत अरसारी

यामेन! के अनुभव ने बच्चों की सहायता करने की प्रेरणा और बोझ दिया

बगोटा, कोलम्बिया – बगोटा में 21 अगस्त 2013 को यामेन! कार्यक्रम के लिए अपने आगमन के कुछ ही दिनों के भीतर रूत अरसारी ने यह जान लिया कि यहाँ से वापस जाते समय उसे काफी दुख होगा। जिन प्यारे लोगों से उसका परिचय और एक घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित होने वाला था, उनके कारण विदाई का समय उसके लिए बहुत कठिन सिद्ध होने वाला था।

जुलाई 2014 में, रूत ने, जो एमडबल्यूसी की सदस्य कलीसिया गिरजा इन्जिलि दी तानाह जावा, इण्डोनेशिया की एक इकाई जीआईटीजे केलेत मण्डली की सदस्या थी, एमडबल्यूसी और मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी में यंग एनाबैपटिस्ट एक्चेंज प्रोग्राम नेटवर्क (यामेन!) के तहत ग्यारह माह की अपनी सेवा पूर्ण कर किया। वे एमडबल्यूसी की सदस्य कलीसिया इग्लेसिया क्रिस्टियाना मेनोनिटा डे कोलम्बिया (मेनोनाइट चर्च ऑफ कोलम्बिया) में अपनी सेवकाई दे रहीं थी।

प्रत्येक सप्ताह रूत ने तेयुसाकिल्ो मेनोनाइट चर्च, बगोटा के द्वारा आयोजित किए गए तीन विभिन्न कार्यक्रमों में सहायता की। सप्ताह के दौरान पड़ोस के स्थान लोस पिनोस और सान निकोलस में वे गरीबों के लिए भोजन व्यवस्था करने के कार्यक्रम में सहायता किया करती थीं, इन स्थानों में अनेक ऐसे परिवार थे जिन्हें हिंसा के बल पर जबर्दस्ती उनके घरों से बेदखल कर दिया गया था। शनिवार के दिन, रूत एक ऐसे कार्यक्रम में सहायता करती थी जिसके अन्तर्गत बगोटा के आसपास के स्थानों में गली–कूचे में रहने वाले निम्न–आयवर्ग के लोगों को भोजन दिया जाता था।

रूत पर सबसे अधिक प्रभाव जिस बात ने डाला वह है, इन समुदायों और मण्डलियों में अपनी सेवा के दौरान लोगों के साथ रूत द्वारा बनाए गए रिश्ते। वे आराधना के लिए अपने मेजबान पीटर और लेटेशिया स्टकी के परिवार के साथ तियुसाकिल्ो मेनोनाइट चर्च को जाया करती थीं। पीटर इस कलीसिया के प्रमुख और पास्टर हैं। उन्होंने रूत को अपने परिवार में एक सदस्य के रूप में स्वीकार किया था, और वह उनके साथ रह कर अपने आप को धन्य समझती थीं।

कलीसिया समुदाय ने एक और तरीके से उन पर प्रभाव डाला था, और वह यह था, कि किस तरह से कलीसिया के सदस्य खुल कर अपने विश्वास, संघर्षों, और आनन्द के विषय में एक दूसरे को बताया करते थे। रूत कहती हैं कि जब उसने लोगों के मुँह से ऐसी गवाही सुना किउनके जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति है तो वह भी अपने जीवन में एक नये रूप में परमेश्वर के कार्य को पहचानने और ध्यान देने लगी।

अनेक वर्षों से रूत का यह बोझ और दर्शन रहा है कि वह बच्चों की सहायता करे। उनका सपना है कि एक दिन वे इण्डोनेशिया में एक ऐसा घर तैयार कर सके जिसमें ऐसे बच्चे रहें जिनकी चिन्ता और देखभाल करनेवाला कोई नहीं है। यामेन के तहत रूत को कोलम्बिया में सौंपा गया कार्य उनकी इस स्वप्न यात्रा का पहला पड़ाव था।

यामेन! कार्यक्रम में भाग लेना उनके लिए एक मूल्यवान अनुभव था जिसका लाभ आज भी उन्हें मिल रहा है। इसके द्वारा उनकी सोच में नए दृष्टिकोण को शामिल करने का द्वार खुला, अब वे दूसरों के दृष्टिकोण से भी अपने आसपास के संसार को देख सकती हैं, वे अब परमेश्वर को अपने जीवन में अधिक गहराई से अनुभव कर सकती हैं।

अधिक जानकारी के लिए, जिसमें 2013–14 के यामेन! प्रतिभागियों की पूर्ण सूची है, एमडबल्यूसी की वेबसाइट mwc-cmm.org देखें।

– क्रिस्टिना टोइब्स, एमडबल्यूसी और एमसीसी का संयुक्त प्रकाशन।

''आप ऐनाबैपटिस्ट क्यों हैं?''

एमडबल्यूसी समुदाय के सदस्य कारण बता रहें हैं कि उन्होंने ऐनाबैपटिस्ट पहचान को अपने लिए क्यों अपनाया।

सान्द्रा कैम्पोस
सदस्य, एमडबल्यूसी कार्यकारिणी समिति, कोस्टारिका

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि मैं यीशु मसीह के पीछे चल रही हूँ।''

जे. नेल्सन क्रेबिल
प्रेसीडेंट–इलेक्ट, यूएसए

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि ऐनाबैपटिस्ट लोगों का मानना है कि यीशु मसीह की शिक्षाओं का पालन हमें यहीं और अभी करना है।''

अयूब ओमान्डी
सलाहकार, यंग ऐनाबैपटिस्ट्स (याब्स) केन्या

''मैं 'शान्ति और मेल के स्तंभ' के कारण एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ।''

टिगिस्ट मिग्बार तेसफाय
सदस्य, यंग ऐनाबैपटिस्ट्स (याब्स) इथोपिया

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट मसीही हूँ क्योंकि यह मसीह और उसके वचन पर आधारित है।''

रिचर्ड शोवाल्टर
सभापति, मिशन कमीशन, यूएसए

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि जिन्होंने मुझे यीशु के विषय में बताया और उसके विषय में शिक्षा दी वे ऐनाबैपटिस्ट थे और मुझे दृढ़ निश्चय है कि ऐनाबैपटिस्टवाद अपने सार में नया नियम आधारित मसीही विश्वास की एक सच्ची अभिव्यक्ति है। संक्षेप में, पतरस, पौलुस, और लुदिया पहली शताब्दी के 'ऐनाबैपटिस्ट' लोग थे।''

मार्क पास्कस
सदस्य, यंग ऐनाबैपटिस्ट्स (याब्स) स्पेन

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि यह एक ऐसी कलीसिया है जो शान्ति स्थापना, प्रेम, और खुला संवाद करने के लिए समर्पित है। और इसलिए भी क्योंकि यह एक ऐसी कलीसिया है जिसे अपने इतिहास पर गर्व तो है परन्तु साथ ही यह अपने आप को अपने सुधारवादी स्वाभाव के कारण परम्पराओं तक सीमित कर नहीं रखती।''

आइरिस लियोन हाटर्शोन
सदस्य, एमडबल्यूसी कार्यकारिणी समिति, यूएसए

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि यह बाइबल के प्रति मेरी इस समझ को दर्शाती है: यीशु हमारे जीवन का आदर्श और शान्ति के लिए सशक्त स्थायी धारणा है।''

जेनेट प्लेनर्ट
उपाध्यक्ष, कनाडा

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि मैं सांसारिक रीत से उलटा चलने वाले, अहिंसक, समुदायों में परिवर्तन करने वाले, शत्रुओं से प्रेम करने वाले, आत्मा की अगुवाई में चलने वाले, यीशु का अनुसरण करने वाले सुसमाचार के प्रति समर्पित हूँ!''

समाचार संक्षेप

पृष्ठ ii से आगे

अधिकारियों को सभाओं के अयोजन की सूचना दें, तथा पास्टर त्रान मिन्ह होआ ने, जो इस स्थान पर एकत्रित होने वाली मण्डली के पास्टर हैं, छापामार कारवाई से ठीक पहले की संध्या पर सम्बन्धित अधिकारियों को सूचित किया गया था कि उनके यहाँ 29 पास्टर आ रहे हैं, और सभा में आए सभी प्रतिभागियों की सारी जानकारी अगली सुबह सौंपने की तैयारी कर रहे थे।

स्थानीय स्तर पर कोई कारवाई न किए जाने पर, अगुवों ने उच्च-अधिकारियों के समक्ष वियतनाम के कानून के तहत उन्हें मिले अधिकारों के जघन्य हनन के विषय में याचिका प्रस्तुत किया। उन्होंने जन सुरक्षा मंत्री और जन अन्वेषण ब्यूरों के प्रमुख को 58 कलीसियाई अगुवों के हस्ताक्षरयुक्त एक ''अभियोजन की याचिका'' भेजा। इसमें स्थानीय पुलिस के विरुद्ध पाँच मुख्य आरोपों को विस्तार से पेश किया गया था, जिसमें बिना वारंट के प्रवेश, बच्चों की गिरफ्तारी और उनसे दुर्व्यवहार, और असहाय विद्यार्थियों को आतंकित करने बन्दूकों का प्रयोग करना शामिल थे।

इन्हेंजलिकल मेनोनाइट चर्च एमडबल्यूसी की सदस्य कलीसिया नहीं है। इस देश की एक अन्य मेनोनाइट सहभागिता, वियतनाम मेनोनाइट चर्च एक पंजीकृत कलीसिया और एमडबल्यूसी की सदस्य कलीसिया है।

इस घटना के विषय में अधिक जानकारी के लिए एमडबल्यूसी की वेबसाइट mwc-cmm.org देखें।

– मेनोनाइट वर्ल्ड रिव्यू के लिए लूक मार्टिन के द्वारा लिखे गए लेख का रूपान्तर।

प्रार्थना के विषय

यामेन! 2014-1015 के प्रतिभागी एशिया में क्षेत्रीय अनुकूलन (ओरियन्टेशन) कार्यक्रम के दौरान। फोटो: आन्द्रिया जीसर

● युवाओं के लिए प्रार्थना करें जिन्होंने 2013-2014 यंग ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट एक्चेंज नेटवर्क (यामेन!) कार्यक्रम जुलाई के मध्य में पूरा किया है। उन युवाओं के लिए प्रार्थना करें जिन्होंने 2014-15 यामेन! अगस्त में आरम्भ किया है। यामेन! मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस और मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी का एक संयुक्त कार्यक्रम है।

● सैंग मिन ली के लिए प्रार्थना करते रहें, जो दक्षिण कोरिया के पहले कॉनशियनशियस आब्जेकटर हैं। वर्तमान में वे जेल में 18 महीने की एक सजा काट रहे हैं, क्योंकि उन्होंने अपने देश के कानून में अनिवार्य रखे गए सैन्य सेवा को पूर्ण करने से अपने विश्वास के कारण इंकार कर दिया, वे इस सजा को भी एक सेवकाई मानते हैं। प्रार्थना करें कि सैंग मिन ली प्रभु की शक्ति और आनन्द का अनुभव करते रहें। दक्षिण कोरिया की ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं के लिए भी प्रार्थना करें, जो गिनती में थोड़ी तो हैं, परन्तु वे शान्ति सम्बन्धी मुद्दों को लेकर एक स्वर में आगे आएं।

● वियतनाम के मेनोनाइट लोगों और उनके अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगियों के लिए प्रार्थना करें जब कि वे वियतनाम की गैरपंजीकृत मेनोनाइट कलीसिया के सदस्यों पर हुए हमले के सम्बन्ध में कदम उठाने पर विचार करते हैं। जून में, पुलिस सुरक्षा बल ने हो छी मिन्ह शहर के ठीक उत्तर में स्थित एक प्रांतीय नगर में अपने चर्च सेन्टर में एकत्रित हुए पास्टरों और बाइबल कॉलेज के विद्यार्थियों के बड़े समूह पर हमला कर दिया था। वियतनाम की मेनोनाइट कलीसियाओं को जानने वाले अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व अपने इन भाइयों और बहनों के साथ अपने भाईचारे को व्यक्त करने के लिए एक उपयुक्त कदम उठाने पर विचार कर रहें हैं।

Courier/Correo/Courrier (ISSN 1041-4436) is published six times a year. Twice a year, the newsletter is inserted into 16-page magazine. Mennonite World Conference, Calle 28A No. 16-41 Piso2, Bogota Colombia.
Publication Office: Courier, 1251B Virginia Avenue, Road, Harrisonburg VA 22802-2434 USA, Periodical postage paid at Harrisonburg VA, Printed in USA.
POSTMASTER: Send Address Changes to Courier, 451B Pleasant Valley Road, Harrisonburg VA 22801 USA.

पेन्नसिलवेनिया 2015 सम्मेलन की नवीनतम खबर

पृष्ठ i से आगे

एमडबल्यूसी की मुख्य अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन अधिकारी लिसा अंगर, जो सम्मेलन की तैयारियों की देखरेख भी कर रहीं हैं, कहती हैं, ''हम एमसीसी को धन्यवाद देते हैं क्योंकि उनके सहयोग से हमारे पास कार्यालय के लिए एक स्थान है जहाँ से हम सम्मेलन के पंजीकरण हेतु तैयारी कर सकते हैं, पंजीकरण की प्रक्रिया को पूरा कर सकते हैं, साथ ही अगले जुलाई में होने वाले सप्ताह भर के इस आयोजन की विस्तारपूर्वक तैयारियाँ कर सकते हैं।''

वे आगे कहतीं हैं, ''हम दो नए सहयोगियों को कर्मचारियों के रूप में शामिल कर रहे हैं, और जैसे जैसे सम्मेलन की तिथि निकट आती जाती हैं हमें कुछ और सहयोगियों की आवश्यकता पड़ेगी। मैं अप्रेल के अन्त में पूर्वी पेन्नसिलवेनिया पहुँच जाऊंगी। इसी समय में, अन्य अनेक लोग का भी वहाँ के कार्यालय में आना जाना आरम्भ हो जाएगा।''

– फिलिस पेलिमॉन गुड

युवा वयस्क एमडबल्यूसी सम्मेलन के लिए अपनी कल्पनाशीलता के सहारे योगदान दे रहे हैं

विन्निपेग, मनिटोबा, कनाडा – मनिटोबा में युवा वयस्कों का एक समूह ''ब्रेड क्लॉथ्स'' (रोटी रखने के लिए कपड़े) तैयार कर रहा है और उन्हें बेच कर जुलाई 2015 में होने वाले मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के सम्मेलन और ग्लोबल यूथ समिट के लिए धन का प्रबन्ध करने और जागरूकता लाने का दोनों कार्य कर रहा है।

''चूंकि हम इस सम्मेलन और इसके ठीक पहले होने वाले ग्लोबल यूथ सम्मिट के मेजबान महाद्वीप हैं, हम लोगों के हाथों और घरों में कोई ऐसी वस्तु रखना चाहते थे ताकि एमडबल्यूसी उनकी प्रार्थना का एक विषय हमेशा बना रहे।'' यह बात केथी गिरब्रेच ने कही, जो कि मेनोनाइट चर्च मनिटोबा की नेतृत्व सेवा के लिए कार्य करती हैं।

एक साथ मिलकर इन युवा व्यस्कों ने यह योजना बनाई कि वे मनिटोबा से तीन कलाकारों – लिसा ओबिरेक, निकोल लिक्स और कायला हेसबर्ट – को आमंत्रित करेंगे कि वे तीनों एक ऐसा डिज़ाइन तैयार करें जिसे कपड़े में उतार कर इसी नूमने के ढेर सारे कपड़े बना सकें।

केथी ने आगे बताया, ''हमने प्रत्येक कलाकार से कहा कि वे एमडबल्यूसी

लिसा ओबिरेक के द्वारा तैयार किया गया नमूना। इस नमूने को ब्रेड क्लॉथ में छापा गया है जिन्हें एमडबल्यूसी के अगले सम्मेलन, पेन्नसिलवेनिया 2015 के लिए धन-संग्रह हेतु बेचा जा रहा है।

सम्मेलन के मूल विषय, 'वॉकिंग विथ गॉड' पर आधारित एक एक डिज़ाइन तैयार करे। इन कपड़ों को देख देख कर लोग विश्व सम्मेलन को अपने स्मरण में रखेंगे, और ये रोटी की टोकरियों में रखने और मेज़पोश के रूप में काम आएंगे। वे एक प्रतीकचिन्ह भी ठहरेंगे, कि मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के तहत, हम सब मेज़ की चारों ओर बैठने के लिए आमंत्रित हैं।''

इन में से एक कलाकार लिसा ओबिरेक अपने डिज़ाइन (ऊपर चित्र दिया गया है) को समझाते हुए बताती हैं: ''मीका 4:1-5 में सब प्राणियों को प्रभु के पर्वत के पास बुलाया गया। मसीहियों को यह आमंत्रण त्रिएक परमेश्वर की ओर से दिया जाता है। इसलिए इस डिज़ाइन में तीन पर्वत हैं, प्रत्येक की अपनी एक खासियत है . . .। इसे हरे रंग से रंगा गया है, धर्मविज्ञान की समझ में यह आशा का रंग है। मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस, अपने सर्वोत्तम रूप में, एक कलीसिया है, संसार भर से इक्ठठा हुए लोगों का एक समूह जो यीशु मसीह को प्रभु मान कर एक घराना बनते हैं। सचमुच में यह आशा देने वाली एक तस्वीर है।''

युवा वयस्कों ने आरम्भ में 300 कपड़े बनवा कर मंगवाया है। वे इसे मेनोनाइट चर्च कनाडा असेम्बली, विन्निपेग में 3-6 जुलाई 2014 को बेचने की योजना बना रहे हैं, और उसके बाद, मेनोनाइट चर्च मनिटोबा की मण्डलियों में जा जा कर इसे बेचा जाएगा।

प्रत्येक कपड़े को 10 से 15 डालर में बेचा जाएगा। कपड़े के लागत से ऊपर के पैसे को एमडबल्यूसी सम्मेलन और ग्लोबल यूथ समिट के लिए भेंट स्वरूप दिया जाएगा।

इन ''रोटी के कपड़ों'' और उनके डिज़ाइन के विषय में अधिक जानने के लिए एमडबल्यूसी का वेबसाइट mwc-cmm.org देखें।

– फिलिस पेलिमान गुड

News Courier Noticias Correo Nouvelles Courrier

October 2014
Volume 29, Number 5

Cesar Garcia Publisher
Ron Rempel Chief Communications Officer
Devin Manzullo-Thomas Editor

Courier News is available on request.
Send all correspondence to:
MWC, Calle 28A No. 16-41Piso 2,
Bogota, Colombia.

Email: info@mwc-cmm.org
www.mwc-cmm.org

एकता की गवाही

अपने समुदायों में परिवर्तन लाने के लिए एक साथ

एमडबल्यूसी कार्यकारिणी और यंग ऐनाबैपटिस्ट (याब्स) कमेटी में विविध संस्कृतियों, धर्मविज्ञान, और राष्ट्रीय पृष्ठभूमियों के प्रतिनिधि शामिल हैं, तौभी वे समान विश्वास की प्रतिबद्धताओं के कारण एक हैं। फोटो: मर्लि गुड

जेनेट प्लेनर्ट

लाई 2015 में, विश्व भर के ऐनाबैपटिस्ट लोग हेरिसबर्ग पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के 16वें सम्मेलन के लिए एकत्रित होंगे। चार दिनों के लिए, अलग अलग अनेक समुदायों से आए देश-विदेश के ये विश्वासी एक साथ मिल कर आराधना करेंगे, एक साथ मिलकर संगति करेंगे, एक साथ मिलकर प्रार्थना करेंगे, और एक साथ मिलकर खेल-कूद में भी भाग लेंगे। एमडबल्यूसी जनरल सेक्रेटरी सीज़र गार्सिया कहते हैं कि यह ''स्वर्ग का एक स्वाद चखने'' जैसा होगा – प्रकाशितवाक्य में दी गई इस प्रतिज्ञा का पूर्वदर्शन होगा कि ''हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़'' परमेश्वर के सिंहासन के सामने उसकी आराधना करने और उत्सव मनाने के लिए एकत्रित होगी (7:9-10)।

इसी कारण, मैं पेन्नसिलवेनिया 2015 का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ। इन ऐनाबैपटिस्ट विश्वासियों के साथ शामिल होने से मैं अपने आप को रोक नहीं पा रही हूँ। मैं उस देह के साथ एक हो कर शामिल होने से अपने आप को नहीं रोक पा रही हूँ जो विभाजनों से प्रभावित नहीं होती – न सिर्फ मेनोनाइट, मेनोनाइट ब्रदरन या ब्रदरन इन ख्राइस्ट के रूप में, न सिर्फ जाम्बियाई या कोलम्बियाई या इण्डोनेशियाई के रूप में, परन्तु मसीह में भाइयों और बहनों के रूप में – एकमात्र जीवित परमेश्वर के सेवकों के रूप में!

विभाजन एक सच्चाई

यद्यपि यह सम्मेलन हमें स्वर्ग का स्वाद पहले से चखने का अवसर देता है, वर्तमान में यह एक सच्चाई है कि पृथ्वी पर हमारे समुदाय अक्सर शान्ति का एक स्थान नहीं बन पाते – न ही एकता से और न विभाजनों से प्रभावित। जैसे कि मैंने नीचे लिखा है:

- सैंग-मिन ली, दक्षिण कोरिया के एक युवा मेनोनाइट हैं, इस समय वे जेल में कैद हैं जहाँ उन्हें 18 महिने बिताने हैं क्योंकि उन्होंने अपने विश्वास के कारण सेना में अपनी अनिवार्य सेवाएं पूरी करने से इंकार कर दिया;
- वियतनाम की एक माता अपने एक बच्चे की देखभाल में लगी हुए है, यह बच्चा कैंसर से पीड़ित है – यह वियतनाम युद्ध के दौरान अमरीका की सेनाओं के द्वारा ''एजेंट ऑरेंज'' नामक रसायनिक हथियार का प्रयोग में लाए जाने का चिरकालिक परिणाम है।
- कनाडा के मूल निवासी अपने विषय में यह बताते हुए रो पड़ते हैं कि कलीसिया द्वारा संचालित अवासीय स्कूलों में उन 100 वर्षों के दौरान उनका शारीरिक और यौन शोषण किया गया जब कनाडा का कानून उनकी पारम्परिक संस्कृति और भाषा को जड़ से मिटाने की जबर्दस्ती कोशिश कर रहा था;
- अनेक देशों की महिलाएं, जो अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति के कारण मजबूर हैं और मानव-तस्करी और यौन धन्धों में लिप्त पाई जा कर पकड़ी गई हैं;
- सीरियाई शरणार्थी मौन और अपने भविष्य को लेकर चिन्तित हैं, क्योंकि युद्ध और आतंक ही उनके भविष्य की दिशा तय करते हैं।

हम एक निदर्यी और अक्सर पीड़ा देने वाले संसार में रहते हैं। परन्तु हम एक ऐसे संसार में भी रहते हैं जहाँ आशा बनी रहती है, और जहाँ न्याय की एक हल्की सी किरण भी चमकती हुई दिखाई देती है। कोलम्बिया के एक मेनोनाइट ने सैन आन्द्रेस में आयोजित इक्युमेनिकल पीस समिट में कहा था, ''संसार में कलीसिया ही एकमात्र ऐसी संस्था है जो देश के हर कोने में विद्यमान है।'' यह बात सत्य है इसलिए आशा भी स्थिर है!

एकता की आशा

एक साथ मिलकर आराधना करना और गवाही देना एक विशेष अर्थ रखता है जब हम संसार में आज अपने विश्वास की प्रासंगिकता और उपयुक्तता पर विचार करते हैं। 1 कुरिन्थियों 1:10-25 में पौलुस एक ऐसी परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए अपनी बात रख रहा है जहाँ कलीसिया के भीतर विभाजन और फूट है, जहाँ लोग एक देह के रूप में एक साथ नहीं आ रहे थे। कलीसिया के कुछ लोग पौलुस की शिक्षा का राग अलापते थे, कुछ अपल्लोस की शिक्षा का, और कुछ कैफा की। वे अपने आत्मिक शिक्षकों के द्वारा दी गई शिक्षाओं की विशेषताओं का प्रयोग झगड़ा और विभाजन करने के लिए करते थे। वे अपने आप को ही सहीं मानते थे, अपने ही पासवान (या अपनी ही कलीसिया) को अधिकृत बताते थे

बजाए कि अपने स्थान और उनके चारों ओर के संसार के लिए क्रूस के अर्थ पर ध्यान केन्द्रित करें। और इस प्रकार के वाद-विवादों की खबरें तेजी से फैलती जा रहीं थी।

पौलुस कुरिन्थियों के लोगों को लिखते हुए यीशु मसीह के नाम से उनसे विनती करता है, ''तुम सब एक ही बात कहो,'' एक ही मन के रहो, और एक ही मत में मिले रहो। क्यों? वे पौलुस के अनुयायियों और अपोल्लोस के अनुयायियों के रूप में, मेनोनाइट ब्रदरन और ब्रदरन इन ख्राइस्ट के रूप में, कांगोलियन और कनाडाई के रूप में अपनी भिन्नताओं और विशेषताओं पर केन्द्रित क्यों न हों? आखिर, वे सभी यीशु के पीछे चल रहें हैं! क्योंकि पौलुस पद 17 में कहता है, यीशु ने हमें सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा है, और शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ताकि मसीह के क्रूस की सामर्थ व्यर्थ न ठहरे। पौलुस इस कलीसिया से, जो अब तक विभाजनों का अनुभव करने लगी थी, आव्हान करता है, कि यह अपने आप को सुधारे – अपने आप को पहले जैसा सम्पूर्ण और पूरा बनाएं। क्रूस की गवाही इसी बात पर निर्भर करती है। सुसमाचार का प्रचार इसी बात पर निर्भर करता है। संसार में परिवर्तन इसी बात पर निर्भर करता है।

सुसमाचार प्रचार करना संसार की दृष्टि में एक मूर्खता की बात हो सकती है। यह सांसारिक सामर्थ का सन्देश नहीं है। यह सैन्य पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए शान्ति या स्वतंत्रता प्राप्त करने का सन्देश नहीं है। यह धन और शक्ति के बल पर व्यवस्था और नियंत्रण कायम रखने का सन्देश नहीं है। यह मृत्यु के माध्यम से जीवन देने का सन्देश है। यह मूर्खों के माध्यम से बुद्धिमानों को लज्जित करने का सन्देश है, यह निर्बलों के माध्यम से शक्तिशाली को लज्जित करने का सन्देश है, यह तिरिस्कृत और दीनदुखियों के माध्यम से प्रतिष्ठित वर्ग को नीचे लाने का सन्देश है, यह यहूदी और अन्यजातियों के एक साथ उद्धार का सन्देश है। यह तिरिस्कृत लोगों को नागरिकता प्रदान करने का सन्देश है।

क्रूस के द्वारा एकता

और सबसे बड़ी बात, सुसमाचार एक ऐसा सन्देश है जिसमें ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो एक हो कर खड़े रहने पर विश्वास करते हैं – अपनी भिन्नताओं के बाद भी – और ''एक मत'' रखना चाहते हैं, जो झगड़ा करना और सार्वजनिक मतभेद रखना नहीं चाहते। हमारा अलग अलग होना सुसमाचार के प्रचार को कमजोर और क्रूस की सामर्थ को व्यर्थ कर देता है।

मुझे एक पोस्टर का ध्यान आ रहा है जिसे मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी (एमसीसी) ने अनेक वर्षों पूर्व तैयार किया था। यह पोस्टर बहुत साधारण था। इस पर लिखा हुआ था, ''आइये संसार के हम सब मसीही इस बात पर सहमत हो जाएं कि हम एक दूसरे को जान से नहीं मारेंगे।'' सैकड़ों वर्षों तक, जहाँ लोग अपने आप को मसीही कहते हैं वहाँ युद्ध होते रहे, मसीही लोग एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध लड़ते रहे, और एक दूसरे को जान से मारते रहे। राजनैतिक मतभेद और राजनैतिक निष्ठा ने आत्मिक बातों से ऊँचा स्थान ले लिया था, और एक विश्वासी भाई दूसरे विश्वासी भाई की जान ले रहा था। हमने संसार के सामने यह किस तरह की गवाही रखा? क्रूस की सामर्थ कहाँ है? क्रूस में छुटकारे या उद्धार की कोई ऐसी सामर्थ नहीं है जो संसार को अपने वश में करने के उद्देश्य से काम में लाई जाए। पौलुस इसी बात को नहीं चाहता था –एक ऐसा क्रूस जिसकी सामर्थ व्यर्थ हो। संसार की आज क्या तस्वीर होती यदि मसीही लोग हमेशा यह मना कर देते कि वे एक दूसरे की जान नहीं लेंगे? संसार की आज क्या तस्वीर होती यदि मसीही लोग हमेशा यह मना कर देते कि वे कभी किसी की जान नहीं लेंगे?

इस कारण, यह काफी महत्वपूर्ण है कि एमडबल्यूसी संसार भर के हमारे लोगों को एक सहमति में लाकर एक सम्बद्धता प्रदान करने वाली देह की भूमिका में विद्यमान रहे।

''और सबसे बड़ी बात, सुसमाचार एक ऐसा सन्देश है जिसमें ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो एक हो कर खड़े रहने पर विश्वास करते हैं – अपनी भिन्नताओं के बाद भी। हमारा अलग अलग होना सुसमाचार के प्रचार को कमजोर और क्रूस की सामर्थ को व्यर्थ कर देता है।''

अनेकता में एकता को लागू करना

जबकि पौलुस हमें प्रेरित करता है कि हम अपनी कमियों को दूर करें और एक दूसरे के साथ सहमति में रहें, हमें इस पर विचार करते समय यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि हमें विभाजनों को दूर करना है, हमें एक दूसरे को समझना है, और इसलिए हमें एक दूसरे के आमने–सामने आना है। यद्यपि ऐसा होता है, लेकिन अक्सर यह देखा जाता है कि वे लोग जो कलीसिया के एक भाग में भिन्न और सहमत न हो सकने योग्य मतों के बारे में सुनते हैं, पीछे मुड़ जाते हैं। एक साथ आ कर चाय–कॉफी पीने की बजाए अक्सर हम तय कर लेते हैं कि एक दूसरे से बात करना बन्द कर देंगे। जब किसी देश के एक भाग की कोई कलीसिया देश के दूसरे भाग की किसी कलीसिया से असहमत होती है, तो यह सहज होता है कि हम इस बात को अनदेखा कर दें, क्योंकि हम अपनी ही योजनाओं और विचारों से सन्तुष्ट हैं। और यह असहमति विभाजन का रूप ले लेती है। कम से कम, और शुरुआत के रूप में, हमें अवश्य ही एक दूसरे के चेहरे की ओर देखना चाहिए यदि हम एक दूसरे को समझना चाहते हैं और विभाजनों को दूर करना चाहते हैं।

हमें एक दूसरे के प्रति समर्पित रहना आवश्यक है। एक बन्धन की तरह जो एक परिवार को बान्धे रखता है, कलीसिया को भी एक दूसरे के प्रति एक अटल समर्पण के द्वारा एकसाथ बान्ध कर रखना आवश्यक है। हम दृढ़ हो कर – आदरपूर्वक – अपनी बात रख सकते हैं। तर्क–वितर्क हो सकते हैं। प्रश्न उठाए जा सकते हैं और चिन्ता की बातों को सामने रखा जा सकता है। परन्तु इन सारी बातों की जड़ में, सामूहिक गवाही के प्रति समर्पण – क्रूस की मूर्खता – हमारा केन्द्रबिन्दु होना आवश्यक है। सुसमाचार की गवाही कमजोर होती है – और मैं ऐसा मानती हूँ कि क्रूस की सामर्थ व्यर्थ ठहरती है – यदि हम एक दूसरे के प्रति समर्पित नहीं है। परमेश्वर के लोगों का एक समुदाय बनने के लिए यह अनिवार्य है। और इसके लिए एक दूसरे के साथ धीरज, सहनशीलता, आशा, और शालीनता का व्यवहार करने की आवश्यकता है।

यीशु के ऐनाबैपटिस्ट अनुयायियों के विश्व समुदाय के रूप में यदि हम अपने बीच के कुछ मतभेदों को दूर कर पाएं, यदि हम आराधना और गवाही के लिए एक साथ आ सकें, तो हम इस संसार में क्रूस की सामर्थ का एक उदाहरण ठहरेंगे, भले ही यह कितनी बड़ी मूर्खता क्यों न प्रतीत हो। यदि हम यीशु के एनाबैपटिस्ट अनुयायियों के रूप में एक हो कर खड़े हो सकें, तो हम मसीही कलीसिया के बड़े विभाजनों को दूर करने के लिए अधिक सक्रियता से योगदान दे सकते हैं। और मेरा यह विश्वास है कि हम जितना अधिक एक साथ खड़े हो कर सब एक ही बात कह सकेंगे, सुसमाचार का उजियाला भी उतनी ही तेज के साथ हमारे संसार में चमकेगा।

क्या होता यदि उत्तर और दक्षिण कोरिया के सभी कोरियाई एक साथ खड़े हो कर सैन्य शक्ति का उपयोग करने से मना कर देंते? क्या होता यदि अमरीका के मसीही वियतनाम में लोगों को मार डालने और रसायनिक हथियारों का प्रयोग करने से मना कर देते? क्या होता यदि कनाडा की कलीसिया एक साथ खड़ी हो कर यह सन्देश देती कि उन्हें कनाडा के अपने मूल निवासी भाई–बहनों के साथ मेलमिलाप करना है? क्या होता यदि लैटिन अमरीका के सारे मसीही परिवार और कलीसिया भवन शान्ति का एक ऐसा पवित्र स्थान बन जाए जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को आदर और सम्मान दिया जाता है? क्या होता यदि 500 वर्ष पूर्व बसने के लिए एक भूमि की खोज कर रहे मसीहियों ने पृथ्वी के संसाधनों को अंधाधुंध दोहन करने से मना कर दिया होता? क्या होता यदि?

ऐसे प्रश्न हास्यपद और मूर्खतापूर्ण लगते हैं – आज के इस जटिल संसार में। तौभी हमें क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना है – एक मूर्खतापूर्ण प्रचार। परमेश्वर ने मूर्खता को चुना कि ज्ञान को लज्जित करे, कि चंगाई, उद्धार और न्याय ले कर आए। परमेश्वर ने ऐसी बातों को चुना जो है ही नहीं, कि उन बातों को जो हैं कुछ नहीं में बदल दें।

परमेश्वर हमें एक ऐसी आशीष दे कि हमें सरल उत्तर, आधी सच्चाइयाँ और दिखावटी रिश्ते असहज लगें, ताकि हम कभी भी क्रूस की सामर्थ को व्यर्थ जाने देने की परीक्षा में न पड़ें।

परमेश्वर हमें एक ऐसी आशीष दे कि हम विभाजन, अन्याय और अत्याचार से क्रोधित हो उठें, ताकि हम एकता, न्याय, और शान्ति को उत्पन्न करने में सहायक बन सकें।

और परमेश्वर हमें एक ऐसी आशीष दें कि हम यह विश्वास करने की मूर्खता करें कि एक साथ मिलकर हम इस संसार में परिवर्तन ला सकते हैं, और इसे एक ऐसे संसार में बदल सकते हैं जिस पर क्रूस की सामर्थ – न्याय, करुणा, और परमेश्वर का प्रेम – प्रभुता करती हो।

जेनेट प्लेनर्ट (कनाडा) मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की उपाध्यक्षा हैं। यह लेख उनके द्वारा बगोटा, कोलिम्बया में 18 मई 2014 की एक आराधना के दौरान दिए गए उपदेश से रूपान्तरित किया गया है।

परमेश्वर के राज्य के भागी के रूप में
विश्व सहभागिता रविवार 2015 की तैयारी

सार में परमेश्वर का राज्य क्या है? मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की सदस्य कलीसियाओं के सामने यह एक प्रश्न है जबकि 2015 में हम विश्व सहभागिता रविवार (वर्ल्ड फैलोशिप सण्डे) मनाने की तैयारी कर रहे हैं।

प्रत्येक वर्ष, एमडबल्यूसी संसार भर के ऐनाबैपटिस्ट समुदायों को प्रोत्साहित करती है कि वे विश्व सहभागिता रविवार में भाग लें – यह एक विश्वव्यापी आयोजन है जिस अवसर पर हम 1525 में स्वीट्ज़रलैण्ड के ज्यूरिख में दिए गए प्रथम ऐनाबैपटिस्ट बपतिस्मा को स्मरण करते हैं। विश्व सहभागिता रविवार हमें एक सुअवसर प्रदान करता है कि हम सब अपनी उस संयुक्त आरम्भिक जड़ को स्मरण करें और अपनी विश्वव्यापी कोइनोनिया (सहभागिता) का उत्सव मनाए।

2015 में, विश्व सहभागिता रविवार 18 जनवरी को मनाया जाएगा। (यह उत्सव हर बार 21 जनवरी के सबसे नज़दीक वाले रविवार को आयोजित किया जाता है क्योंकि इसी दिन पहला ऐनाबैपटिस्ट बपतिस्मा दिया गया था।) इस विश्वव्यापी उत्सव को मनाने में मार्गदर्शन के लिए एमडबल्यूसी आराधना के लिए संसाधन/सहायक सामग्री तैयार करती है और अपने एक महाद्वीप क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित करती है। इस वर्ष आराधना का मूल विषय होगा, ''संसार में परमेश्वर का राज्य क्या है?'' जिस महाद्वीप क्षेत्र पर इस वर्ष ध्यान केन्द्रित किया जाएगा, वह है, उत्तरी अमरीका।

इस क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित करना इस बार पूरी तरह से उपयुक्त है, क्योंकि उत्तरी अमरीका का ऐनाबैपटिस्ट समुदाय 21–26 जुलाई 2015 को हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में एमडबल्यूसी के अगले सम्मेलन पेन्नसिलवेनिया 2015 की मेजबानी कर रहा है। उत्तरी अमरीका में एमडबल्यूसी की नौ सदस्य कलीसियाएं हैं: ब्रदरन इन ख्राइस्ट (कनाडा और यूएसए), मेनोनाइट ब्रदरन (कनाडा और यूएसए), मेनोनाइट चर्च (कनाडा और यूएसए), इव्हेंजलिकल मेनोनाइट कॉन्फ्रेंस (कनाडा), इव्हेंजलिकल मेनोनाइट मिशन चर्च (कनाडा और यूएसए) और कन्सर्वेटिव मेनोनाइट कॉन्फ्रेंस (यूएसए)। सब मिला कर इन सदस्य कलीसियाओं में लगभग 223,000 बपतिस्मा प्राप्त सदस्य हैं।

आराधना का मूल विषय – ''संसार में परमेश्वर का राज्य क्या है?'' – भी बिल्कुल उपयुक्त है। यद्यपि हम एक विश्वव्यापी सहभागिता हैं और हमारी अलग अलग सांस्कृतिक, आर्थिक, और राजनैतिक पृष्ठिभूमियाँ है, हम एक किए हुए एक परिवार भी हैं – हम मसीह के द्वारा परमेश्वर के इस राज्य के मूल्यों के अनुसार जीवन जीने के लिए बुलाए गए हैं, भले ही हम अलग अलग देश, अलग अलग भाषा, अलग अलग संस्कृति या अलग अलग जाति के लोग क्यों न हों। विश्व सहभागिता रविवार की आराधना के लिए प्रार्थना के विषय, उपदेश के लिए सुझाव, कुछ प्रतीकात्मक गतिविधियाँ, और बाइबल के पाठों (मत्ती 6:9–13, मत्ती 6:28–34), पर मनन को शामिल करते हुए आराधना के लिए सहायक सामग्री तैयार की गई है, जिसके द्वारा हमें सहायता मिलेगी कि हम परमेश्वर के राज्य की शिक्षाओं को यहाँ और अभी अपना सकें और अपने जीवन में साकार कर सकें।

ऐनाबैपटिस्ट परम्परा में, टॉवेल और बेसिन सेवकपन, दीनता, और बराबरी के सद्गुणों के प्रतीक हैं – ये सारे सद्गुण परमेश्वर के राज्य में केन्द्रीय स्थान रखती हैं। फोटो: क्रिस्टिना टोइव्स

आराधना के ये संसाधन इस समय एमडबल्यूसी के वेबसाइट (www.mwc-cmm.org) में उपलब्ध है। यह एमडबल्यूसी की सदस्य और सम्बन्धित कलीसियाओं के अगुवों को भेजा जा चुका है कि वे इसे स्थानीय मण्डलियों में वितरित करें।

मण्डलियों को हम उत्साहित करते हैं कि विश्व सहभागिता रविवार को मनाते हुए आराधना के दौरान विश्व ऐनाबैपटिस्ट चर्च आन्दोलन के लिए विशेष भेंट ली जाए। इस विशेष भेंट को देने का एक तरीका यह होगा कि हर सदस्य को न्यौता दिया जाए कि वह एक समय के भोजन में खर्च आने वाली राशि अपनी ओर से योगदान के रूप में दे।

''एक समय का भोजन'' की यह भेंट वर्ष में एक बार देने में एमडबल्यूसी का एक एक सदस्य सक्षम है। कुछ सदस्य अधिक देने में भी सक्षम है, और उन्हें इसके लिए उत्साहित किया जाना चाहिए। जो अधिक सक्षम नहीं हैं उन्हें यह बताते हुए उत्साहित किया जाना चाहिए कि एमडबल्यूसी की कार्यकारिणी समिति जिसमें हर महाद्वीप के प्रतिनिधि शामिल हैं, आश्वस्त है कि विश्व भर के अधिकांश वयस्क विश्व कलीसिया के कार्य के लिए एक समय के भोजन के बराबर का योगदान देने में सक्षम हैं। इन भेंटों से सहायता मिलेगी कि हम अपने विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट चर्च परिवार के नेटवर्क और संसाधनों को और सशक्त बना सकें।

एमडबल्यूसी के जनरल सेक्रेटरी, सीज़र गार्सिया के अनुसार, ''विश्व सहभागिता रविवार हमारे लिए एक ऐसा अवसर है कि हम लोगों को यह स्मरण दिलाए कि हम परमेश्वर के घराने में बहनों और भाइयों के रूप में एक दूसरे के हैं . . . हमें एक दूसरे का सहयोग करना है, कष्ट में पड़े हुए और सताए जाने वाले लोगों को हमें बल देना है, और एक दूसरे से सीखना है। ये बातें वर्ष भर होती हैं, परन्तु हम इन्हें सीधे सीधे देख नहीं पाते।'' 2015 में, एमडबल्यूसी की अन्य सदस्य कलीसियाओं के साथ मिलकर हम अपनी सहभागिता को विश्व सहभागिता रविवार मनाने के द्वारा दृश्य रूप में प्रगट करें।

यात्री, परदेशी, चेले

ओन्टारियो, हॉवटन के निकट 1903 में दिया जा रहा एक ब्रदरन इन ख्राइस्ट रीति का बपतिस्मा । ब्रदरन इन ख्राइस्ट उन अनेक ऐनाबैपटिस्ट समुदायों में से एक हैं जो कनाडा को अपना मूल स्थान मानते हैं। साभार: ब्रदरन इन ख्राइस्ट हिस्टोरिकल लाइब्रेरी एण्ड आर्काइव्स

रॉयडन लोयवन

सार भर के प्रत्येक देश के मेनोनाइट (और अन्य ऐनाबैपटिस्ट) लोगों के समान, कनाडा के मेनोनाइट लोगों की जड़ें उनके देश में पाई जाती हैं और देश के इतिहास की इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्व पटल में कनाडा एक बहुत बड़ा देश है, यह अटलॉटिक से पेसेफिक और पेसेफिक से आर्कटिक तक 7000 किलोमीटर में फैला हुआ है। यह विश्व के सबसे धनी राष्ट्रों में से एक है, और इसका जन–शिक्षा और जन–स्वास्थ तंत्र अत्यंत मजबूत है। यहाँ अधिकांश लोग अग्रेंजी भाषा में बात करते हैं क्योंक ग्रेट ब्रिटेन से इसका एक मजबूत ऐतिहासिक सम्बन्ध है, यद्यपि क्यूबेक में फ्रेंच भाषाई लोगों का भी अच्छा–खासा समूह है। इतिहास के अनुसार यहाँ का समाज मुख्यत: बाहर से आकर बसा है – कृषक पलायन कर विशेष रूप से ओन्टारियो और पश्चिमी कनाडा में आ कर बस गए थे – इस कारण मूल निवासियों के साथ संघर्ष का एक लम्बा इतिहास भी है, कुछ संघर्ष हिंसक भी थे।

यद्यपि यहाँ दो भाषा बोलने वाले लोग मुख्य रूप से रहते हैं, परन्तु अपने इतिहास में कनाडा ने अल्पसंख्यक संस्कृति को भी अपनाया, और विशेष रूप से बीसवीं शताब्दी के अन्तिम 30 वर्षों में विश्व के दक्षिण से पलायन कर आए अनेक नए लोगों को भी स्वीकार किया। वर्तमान में, कनाडा की कुल अबादी तीन करोड़ पचास लाख है, इसमें से सिर्फ दो तिहाई लोग मसीही हैं (कैथोलिक लोगों की संख्या प्रोटेस्टेंट लोगों से लगभग दोगुना है)। अस्सी लाख कनाडाई किसी धर्म को नहीं मानते; मुसलमानों की संख्या दस लाख है; दस लाख लोग भारतीय धर्मों (हिन्दु और सिक्ख) के अनुयायी हैं; और बौद्ध व यहूदी धर्म के अनुयायियों की संख्या तीन–तीन लाख की है।

मेनोनाइट लोग – संख्या में अलग अलग तरह की गणना के अनुसार 127,000 (2010 में मेनोनाइट चर्चों की सदस्य संख्या) और 175000 (कनाडा की 2011 जनगणना में स्वयं को मेनोनाइट बताते वाले) के बीच है – कनाडा में अल्पसंख्यक हैं। कनाडा के मेनोनाइट लोगों में काफी भिन्नताएं भी पाई जाती है, जबकि 20 डिनोमिनेशन ''मेनोनाइट'' नाम का प्रयोग करते हैं।

मेनोनाइट चर्च और मेनोनाइट ब्रदरन

इन 20 डिनोमिनेशनों में, दो सबसे बड़े समूह मेनोनाइट ब्रदरन (एमबी) और मेनोनाइट चर्च (एमसी) हैं, जिनकी सदस्य संख्या क्रमश: 38,000 और 32,000 है। ये दो समूह मुख्यत: शहरी क्षेत्र के समूह हैं, और विशेष रूप से कनाडा के गैर–मेनोनाइट लोग इनकी ओर आकर्षिक हो कर इनके साथ शामिल हो जाते हैं, साथ ही चीनी और हिसपानिट लैटिन अमरीकी प्रवासी भी इन समूहों में शामिल होते रहे हैं।

एमबी मण्डलियों का इतिहास 1860 में रूस देश में आरम्भ हुआ, जब वे मुख्यधारा के मेनोनाइट लोगों से अलग हो गए, वे व्यक्तिगत विश्वास पर जोर देते थे और डूब के बपतिस्मा के लिए पहचाने जाते थे कनाडा में प्रथम एमबी मण्डली की स्थापना एक मिशन आऊट–स्टेशन के रूप में 1888 में हुई, परन्तु एक कनाडाई एमबी कॉन्फ्रेंस 1923 तक छोटे रूप में रहा जब रूस के साम्यवाद से भाग कर आए प्रवासियों का कनाडा आना आरम्भ हुआ।

एमसी मण्डलियों का इतिहास अधिक जटिल है, जैसा कि 1999 में ''जनरल कॉन्फ्रेंस (जीसी)'' और 1800

''(ओल्ड) मेनोनाइट'' के रूप में पहचाने जाने वाले दो डिनोमिनेशनों का विलय हुआ था। ओल्ड मेनोनाइट का गठन उस समय हुआ था जब पेन्नसिलवेनिया से ऊपरी कनाडा (बाद में ओन्टारिया कहलाया) में मेनोनाइट लोगों का आगमन हुआ, पहली बार 1786 में, परन्तु 1800 के बाद बहुत बड़ी संख्या में।

यद्यपि उत्तर अमरीका के जनरल कॉन्फ्रेंस के 1860 में हुए आरम्भ में ओन्टारिया की एक मण्डली भी शामिल थी, किन्तु कनाडा में जनरल कॉन्फ्रेंस की स्थायी उपस्थिति 1903 में कनाडा में कॉन्फ्रेंस ऑफ मेनोनाइट्स इन कनाडा की स्थापना के साथ दर्ज हुई, और फिर 1920 और 1940 के दशकों में सोवियत संघ से मेनोनाइट लोगों के पलायन पर इसे और बल मिला। जहाँ तक अनेकताओं की बात है, एमसी मण्डलियों द्वारा अनेकता में एकता और सहभागिता पर बल दिया जाता है, साथ ही से मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी से जुड़े सामाजिक न्याय के कार्यक्रमों को भी विशेष महत्व दिया जाता है।

अभिषिक्त और अगुवे 1917 में किचेनर, ओन्टारियो में आयोजित मेनोनाइट ब्रदरन इन ख्राइस्ट की एक सभा के दौरान। वर्तमान में, अनेक विलय और बदलावों के बाद, इस समूह को इव्हेंजलिकल मिशनरी चर्च ऑफ कनाडा के नाम से जाना जाता है। साभार: मेनोनाइट आर्काइव्स ऑफ ओन्टारियो

कनाडा में अन्य ऐनाबैपटिस्ट– मेनोनाइट समूह

औसत आकार के 4,000 से 6,000 सदस्यों वाले अनेक डिनोमिनेशन ऐनाबैपटिस्टवाद और इव्हेंजलिकल प्रोटेस्टेंटवाद के बीच विलय की वकालत करते हैं। ब्रदरन इन ख्राइस्ट चर्च का उदय अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्त में स्विज़–साऊथ जर्मन मेनोनाइट लोगों के यूएसए से ऊपरी कनाडा में पलायन के साथ हुआ। इव्हेंजलिकल मेनोनाइट कॉन्फ्रेंस (इएमसी) और इव्हेंजलिकल मेनोनाइट मिशन कॉन्फ्रेंस (इएमएमसी) दोनों का ही उदय 1870 के दशक में हुए डच–रूसी पलायन से हुआ, और दोनों को ही बीसवीं शताब्दी के मध्य के इव्हेंजलिकलवाद ने दिशा दिया। ये समूह अपने विदेशी मिशनों और एमसीसी को सहयोग देने के लिए जाने जाते हैं।

शायद यह आश्चर्यजनक लगे, कनाडा के 17 मेनोनाइट डिनोमिनेशन – जिनमें 30,000 से अधिक सदस्य हैं – ''सीधे और सरल समूह'' या ''पुरानी परम्परा'' का प्रतिनिधित्व करने वाले समूह हैं। ये समूह मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस से सदस्यता की मांग कम ही करते हैं। वे अपनी साधारण जीवन शैली, अपने मूल्यों के साथ समझौता न करने की प्रतिबद्धता, और समाज से अलगाव के कारण अलग से पहचाने जाते हैं, वे साधारण कपड़ों में अलग से दिखाई दे जाते हैं, स्त्रियाँ सिर पर ओढ़नी डाले हुए और पुरुष लम्बी बाँह के बटन युक्त कमीज़ पहिने हुए रहते हैं। इन ''सीधे और सरल समूह'' के लोगों में से सबसे अधिक परम्परावादी लगभग 20 प्रतिशत लोगों को ''घोड़ा और बग्गी'' मेनोनाइट नाम दे दिया गया है।

कनाडा में ऐसे दो इव्हेंजलिकल कॉन्फ्रेंस भी हैं (पहले ये मेनोनाइट ब्रदरन इन ख्राइस्ट और इव्हेंजलिकल मेनोनाइट ब्रदरन के नाम से थे और अब ये क्रमश: इव्हेंजलिकल मिशनरी चर्च ऑफ कनाडा और फैलोशिप ऑफ इव्हेंजलिकल बाइबल चर्चेज़ के नाम से जाने जाते हैं) जिन्होंने मेनोनाइट नाम को हटा दिया है। कनाडा में मेनोनाइट से निकटता से जुड़े (नियर–मेनोनाइट) समूह भी पाए जाते हैं, जैसे हटराइट और एक छोटी संख्या में आमिश।

1991 में हमोंग मेनोनाइट चर्च (किचेनर, ओन्टारियो) के अगुवे, बांए से दांए: गे यांग, तोआ जांग, ली क्सॉग, तोव वांग। जातीय विविधता में बढ़ोतरी कनाडा मेनोनाइट के इतिहास में हुए अनेक नए विकास में से एक है। फोटो: लैरी बोशार्ट/साभार: मेनोनाइट आर्काइव्स ऑफ ओन्टारियो

कनाडा में स्थित मेनोनाइट संस्थाएं

कनाडा के मेनोनाइट समुदाय को मजबूत करने के लिए, दूसरे स्थानों के मेनोनाइट लोगों की तुलना में, यहाँ के लोगों के लिए बड़ी संख्या में अलग अलग प्रकार की संस्थाएं संचालित हैं। बल्कि, यह भी सम्भव है कि यहाँ आप एक मेनोनाइट परिस्थिति में जीवन बिता सकें – विशेष करके ग्रामीण क्षेत्रों में और किचनर–वाटरलू (ओन्टारियो), विन्निपेग (मनिटोबा), ससकाटून (ससकाटशेवन) और एब्बोट्सफोर्ड (ब्रिटिश कोलम्बिया) जैसे शहरों में। अनेक मेनोनाइट बच्चे निजी प्राथमिक या उच्च माध्यमिक स्कूल को जाते हैं। युवाओं को स्कूली शिक्षा के बाद ऐनाबैपटिस्ट–मेनोनाइट कॉलेजों में विश्वविद्यालय स्तरीय धार्मिक और सामान्य अध्ययन करने का अवसर रहता है, इन संस्थाओं में कनाडियन मेनोनाइट यूनिवर्सिटी, विन्नीपेग; कोलम्बिया बाइबल कॉलेज, एब्बाट्सफोर्ड; और कोनार्ड ग्रेबल यूनिवर्सिटी कॉलेज, वाटरलू प्रमुख और नामचीन हैं। युवा परिवारों को आसानी से लोन मिल जाता है जो कि कर्ज देने वाली मेनोनाइट मूल की दर्जनों संस्थाओं द्वारा उपलब्ध कराया जाता है; इन में सबसे बड़ी संस्था स्टेनबाक क्रेडिट यूनियन, मनिटोबा है, जिसकी कुल सम्पत्ति चार अरब डालर की है। मेनोनाइट द्वारा संचालित अनेक कम्पनियों के द्वारा अग्नि बीमा कराया जाता है; मेनोनाइट एड यूनियन, जो कि 1866–2002 तक सक्रिय था, सबसे ऐतिहासिक था। मेनोनाइट लोग छुट्टियों के समय टूर पैकेजों के लिए मेनोनाइट हेरिटेज क्रूज़ जैसी सेवाओं पर भी बीते समयों में निर्भर रहे हैं। ''मेनोनाइटिंग योर वे'' भी ऐसी ही लोकप्रिय सेवा रही है।

अनेक शहरों में, मेनोनाइट लोग मेनोनाइट अभिलेखागारों में जाकर अपनी वंशावली सम्बन्धित जानकारियाँ ढूंढ़ सकते हैं या फिर अनेक अजायबघरों में जा कर पुराने समयों की यादें ताज़ा कर सकते हैं। मेनोनाइट

कनाडा में ऐनाबैपटिस्ट लोग

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के सदस्य कलीसियाओं की एक झलक

ब्रदरन इन ख्राइस्ट (बीआईसी) कनाडा

सदस्यता	4,080
मण्डलियाँ	53
मुख्यालय	ओकविले, ओन्टारियो
प्रमुख अधिकारी	डाऊग साइडर

कनाडियन कॉन्फ्रेंस ऑफ मेनोनाइट ब्रदरन चर्चेज़

सदस्यता	37,655
मण्डलियाँ	260
मुख्यालय	विन्नीपेग, मनिटोबा
प्रमुख अधिकारी	पॉल लोयवन

इव्हेंजलिकल मेनोनाइट कॉन्फ्रेंस (कनाडा)

सदस्यता	6,473
मण्डलियाँ	62
मुख्यालय	स्टेनबाक, मनिटोबा
प्रमुख अधिकारी	रिचर्ड क्लास्सन

इव्हेंजलिकल मेनोनाइट मिशन चर्च

सदस्यता	4,387 (कनाडा)/425 (यूएसए)
मण्डलियाँ	22 (कनाडा)/4 (यूएसए)
मुख्यालय	विन्निपेग, मनिटोबा

मेनोनाइट चर्च कनाडा

सदस्यता	32,000
मण्डलियाँ	227
मुख्यालय	विन्निपेग, मनिटोबा
प्रमुख अधिकारी	हिल्डा हिल्डेब्रांड्ट

Source: MWC World Map
www.mwc-cmm.org/maps/world

फाऊन्डेशन ऑफ कनाडा द्वारा वसीयत तैयार करने में भी सहायता की जाती है। साथ ही, अनेक समुदायों में बुजुर्गों के लिए ''मेनोनाइट'' वृद्धालय भी पाए जाते हैं; उदाहरण के लिए एब्बोट्सफोर्ड में, मेनो टेरेस इस्ट के छ: मन्जिले इमारत में 95 सुइट (कमरों के समूह) हैं, जिसमें वरिष्ठजनों को पूर्ण सुविधाएं दी जाती हैं और उनकी बेहतरी के लिए हर पहलू का ध्यान रखा जाता है। अनेक समुदायों में मेनोनाइट के स्वामित्व वाले अन्तिम-संस्कार केन्द्र और निजी कब्रिस्तान भी हैं।

कनाडा में मेनोनाइट लोगों ने अपने मिशन को सहयोग करने के लिए लगातार राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के संचालन पर ध्यान केन्द्रित किया है। बल्कि यह भी कहा जा सकता है, कि जबकि कनाडा के मेनोनाइट लोग एक व्यापक संसार के प्रति अधिक खुला रूख अपना रहे हैं, वहीं वे अधिक राष्ट्रकेन्द्रित भी होते जा रहे हैं और अपने आप को उत्तर कया अमरीकी संस्थाओं से अलग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, 1963 में एमसीसी कनाडा की स्थापना एक्रोन, पेन्नसिलवेनिया स्थिति एमसीसी मुख्यालय से अलग रखते हुए की गई थी, ताकि ''कनाडा के मेनोनाइट लोगों की आवाज को अधिक स्पष्टता'' से सामने लाया जा सके। 1967 में, मेनोनाइट हिस्टोरिकल सोसाइटी ऑफ कनाडा का गठन एक एकीकृत ऐतिहासिक पहचान स्थापित करने के उद्देश्य से किया गया था, इसके लिए विशेष कर फ्रेंक एच. एप्प के द्वारा मेनोनाइट्स इन कनाडा के रूप में तीन संस्करणों वाले इतिहास की एक श्रृंखला आरम्भ किया गया था। 1999 में एक एकीकृत मेनोनाइट चर्च डिनोमिनेशन गठित करने के उद्देश्य से हुए ओल्ड मेनोनाइट और जनरल कॉन्फ्रेंस के विलय के समय इसकी स्थापना के साथ ही एक नया विभाजन भी सामने आ गया, एक विभाजन कनाडा-यूएसए सीमा पर, जिससे एमसी कनाडा का उदय हुआ और साथ साथ यूएसए के इसके दूसरे पक्ष का भी। ऐसी ही बातें एमबी, इएमसी, ब्रदरन इन ख्राइस्ट और अन्य कॉन्फ्रेंसों में भी हुईं।

एमसीसी कनाडा के आरम्भ होने पर आश्चर्यजनक तरीके से प्रांतीय और संघीय सरकारों के साथ नज़दीकी सम्बन्ध भी बनने लगे। उदाहरण के लिए, 1975 में एमसीसी कनाडा ने ओटावा में एक एडवोकेसी (सरकार के सामने अपना पक्ष मजबूत करना) कार्यालय भी आरम्भ किया जिसका उद्देश्य न सिर्फ सरकार से अपने लिए विशेषाधिकारों की मांग करना था बल्कि सार्वजनिक नीतियों को रूप देने के अवसर का अधिकार भी मांगना था। वास्तव में, कनाडा के मेनोनाइट लोग सरकारी एजेंसियों के साथ खुलकर काम करने के नाम से पहचाने जाने लगे। एमसीसी के द्वारा स्थापित कनाडियन फूडग्रेनबैंक भी संघीय सरकार द्वारा दिए गए अनुदान के कारण चल पड़ा। साथ ही, कनाडा में संघीय संसद और प्रांतीय विधान सभाओं में मेनोनाइट लोगों ने बड़ी संख्या में अपनी सेवाएं दी हैं।

कनाडा मेनोनाइटवाद की मूल बातें

कनाडा मेनोनाइट के इतिहास में समय समय पर अनेक मूल बातें सामने आईं जो उनकी पहचान बताती हैं। उदाहरण के लिए, कनाडा के मेनोनाइट लोगों ने एक सशक्त विश्व समुदाय का निर्माण करने के लिए विश्व के दूसरे भागों के मेनोनाइट लोगों के साथ अपने आप को जोड़ा। उन्होंने द्विराष्ट्रीय संस्थाओं को अपनाया, जैसे 1920 के बाद एमसीसी, 1951 के बाद मेनोनाइट डिज़ास्टर सर्विस, और 1952 के बाद मेनोनाइट इकोनॉमिक डेव्हलेपमेंट एसोसिएट्स। ऐतिहासिक दृष्टि से, एमबी और एमसी कलीसियाओं के उत्तरी अमरीकी विदेशी मिशनों के साथ निकट गठजोड़ है, विशेष कर काँगो, भारत और मध्य अमरीका के क्षेत्रों में।

कनाडा के उल्लेखनीय मिशनरियों में सुसन्ना प्लेट जैसे लोग शामिल हैं, इन्होंने 1942 में कलीसिया की ओर से किसी भी प्रकार की सहायता के बिना ही एक मिशनरी के रूप में ब्राजील जाने के लिए अपने देश को छोड़ा। एब्बोट्सफोर्ड के जेकब लोएवन शायद विश्व भर के सबसे विख्यात मिशनरी रहे, वे एमबी के एक मिशन विशेषज्ञ थे जो आलोचात्मक आत्मविश्लेषण और देशी नेतृत्व जैसे विचारों के लिए जाने जाते थे। युद्ध में भाग न लेने और अहिंसा जैसे मुद्दों पर कनाडा के मेनोनाइट युवाओं के दृष्टिकोण को मसीही शान्ति स्थापक दलों ने बदल दिया है। कनाडा की कलीसियाएं मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की सशक्त सहयोगी रहीं है।

मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी के एक राहत कार्य के अर्न्तगत, जिसमें आपदाग्रस्त क्षेत्रों में भोजन और अन्य सामग्री सहायता के तौर पर उपलब्ध कराई जाती थी, एलिस स्निडर अन्तर्राष्ट्रीय वितरण के लिए 1954 में क्रिसमस पैकेटों पर नाम लिखते हुए। फोटो: डेविड हन्सबर्गर/साभार मेनोनाइट आकइव्स ऑफ ओन्टारियो।

कनाडा के मेनोनाइट लोगों ने अपने आप को नए रूपों में व्यक्त करना भी सीखा है। इतिहास में उनके पास बेन्जामिन एबी जैसे गायक रहें हैं जिन्होंने 1830 के दशक में कनाडाई गीत पुस्तक तैयार किया और विन्नीपेग के बेन हार्क जैसे संगीतज्ञ रहे जिन्होंने संगीत को समुदायिक गायन दलों और आर्केस्ट्रा के स्तर तक ऊँचा उठाया। उनके बीच अच्छे अच्छे लेखक भी हुए, और उनमें से अनेक राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात भी हुए; रूडी विब द्वारा 1962 में लिखित पीस शैल डिस्ट्राय मैंनी (शान्ति बहुतों का नाश कर देगी) आज भी आधार और दिशा प्रदान करने वाली एक पुस्तक मानी जाती है। वैसे ही, ''मेनोनाइट'' फिल्में भी प्रचलित हुई हैं; उदाहरण के लिए, सोवियत संघ की पीड़ा का वर्णन करने वाली एण्ड वैन दे शैल आस्क ने हजारों दर्शकों को आकर्षित किया है। और इसी कड़ी में, वेबसाइट पर डाली जाने वाली अनेक स्रोत सामग्रियाँ व संसाधन भी उभर कर सामने आए हैं, जिनमें ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट इन्साक्लोपिडया ऑनलाइन (GAMEO) का आरम्भ मेनोनाइट हिस्टोरिकल सोसाइटी ऑफ कनाडा की एक परियोजना के रूप में किया गया।

कनाडा मेनोनाइट के इतिहास की सबसे मुख्य विशेषता शायद प्रवास/पलायन से सम्बन्धित है। पलायन कर आए प्रवासियों के सात विशेष आगमनों की यहाँ प्रमुख भूमिका है। पहले तीन आगमन, उन्नीसवीं शताब्दी में हुए, तीनों में से प्रत्येक समूह सिर्फ सीमाओं पर कृषि करने वाले समुदाय के रूप में स्थापित होने की दृष्टि से बसे, यह सभी ब्रिटिश राज की सुरक्षा में हुआ। इन समूहों में अमरीकी क्रान्ति युद्ध के आसपास ऊपरी कनाडा में आए स्विस–अमरीकी मेनोनाइट; 1820 के दशक में यूरोप से आए आमिश नवआगन्तुक; और 1870 के दशक में रूस द्वारा उसके सैन्य–छूट नियम में बदलाव लाए जाने के बाद मनिटोबा को आएडच मूल के 8000 मेनोनाइट शामिल हैं।

बीसवीं शताब्दी में दो समूह यूक्रेन और रूस युद्ध के समय आए; 20,000 लोग 1920 के दशक में कनाडा द्वारा प्रवासियों को अपनाने में खुलेपन का लाभ उठाने के लिए, और 8000 मुख्यत: महिलाओं को मुखिया मानने वाले परिवार 1948 के बाद आए।

छठवां और सातवां समूह विश्व के दक्षिण भाग के नवआगन्तुक थे। उनमें से अनेक निम्न–जर्मन भाषी लैटिन अमरीकी थे, उन मेनोनाइट लोगों के वंशज जो अंग्रेजी–समावेश से बचने के लिए कनाडा छोड़ कर चले गए थे। यूरो–कनाडियन के रूप में मेनोनाइट लोगों की पुरानी छवि को बदलने का मुख्य श्रेय विश्व के दक्षिण के आने वाले नवआगन्तुकों को दिया जाता है जिन्होंने कनाडा आने के बाद मेनोनाइट कलीसियाओं की सदस्यता ग्रहण कर लिया : इनमें चिन (बर्मी), चीनी, हमोंग, कोरियाई, हमोंग (लोआशियन), पंजाबी (भारतीय और पाकिस्तानी), स्पेनिश (लैटिन अमरीकी) और वियतनामी नवआगन्तुक, और अन्य शामिल हैं। अधिकतर ये नवआगन्तुक गृह–युद्ध या गरीबी से तंग आकर शरणार्थियों के रूप में आए।

नये विकास

हाल के दशकों में कनाडा मेनोनाइट लोग आराधना और कलीसियाई जीवन के नए रूपों के प्रति खुलापन दिखाने लगे हैं। यद्यपि जेनेट डगलस हॉल समय से काफी आगे निकल

मीटिंग हाऊस में – ओकविले मुख्यालय की मेनोनाइट इन ख्राइस्ट की बहुस्थानीय मण्डली – पास्टर ब्रक्सी केवे (कैमरे से पीछे) रविवार की सुबह उपदेश देते हुए। इसके बाद उनके उपदेश का प्रसारण सेटेसाइट के माध्यम से दक्षिण ओन्टारियो की कलीसिया स्थलों में किया जाता है। साभार: मीटिंग हाऊस।

चुकी थीं जब उन्होंने डोरनॉक ओन्टारियो में मेनोनाइट ब्रदरन के ख्राइस्ट चर्च में एक पास्टर के रूप में सेवकाई की थी, वे उन महिलाओं की अग्रदूत थी जिन्होंने सीनियर पास्टरों के रूप में बड़ी संख्या में अपनी सेवाएं दी है, पहले 1970 के दशक में एमसी कलीसियाओं में, और अभी अभी एमबी, इएमसी और ब्रदरन इन ख्राइस्ट मण्डलियों में।

कुछ लोगों ने अब अनौपचारिक नेतृत्व ढांचे को अपना लिया है, इनमें मोर्डन, मनिटोबा की पेम्बिना फैलोशिप जैसी बहु–स्थानीय गृह कलीसियाएं या विन्निपेग में फोर्ट गैरी मेनोनाइट फैलोशिप जैसी अवैतनिक पासवानों वाली कलीसियाएं शामिल हैं। मीटिंग हाऊस, जो ओकविले, ओन्टारियों में ब्रदरन इन ख्राइस्ट की एक बड़ी मण्डली है, ऐसे ''लोगों के लिए कलीसिया है जो कलीसिया में नहीं है'' और यह अलग अलग स्थानों में स्थित फिल्मी थियेटरों में एकत्रित होते हैं, जो विडियो के द्वारा एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। अन्य मण्डलियाँ, जैसे एमसी डिनोमिनेशन की टोरंटो यूनाइटेड मेनोनाइट चर्च, एलजीबीटी समुदाय के सदस्यों को अपनाने के लिए जानी जाती हैं।

कलीसिया–स्थापना भी हाल में हो रहे विकास का एक हिस्सा है। विशेष रूप से एमबी डिनोमिनेशन ने अलग अलग प्रकार से सशक्त कलीसिया–स्थापना प्रयोग के तौर पर किया है, इनमें से क्यूबेक की इग्लेसेस देस फ्रेरेस मेनोनाइट्स प्रमुख है। बीते दशकों में मनिटोबा की जनरल कॉन्फ्रेंस कलीसियाओं ने कनाडा के मूल समुदाय तक पहुँचने और उनके साथ मिलकर आराधना करने का प्रयास किया है, और ऐसे तरीकों को सामने लाने का प्रयास किया है जिनमें सृष्टिकर्ता परमेश्वर की धारणा पर जोर दिया है।

अन्तिम बात, अनेक कलीसियाओं ने पारम्परिक गीत–पुस्तकों को हटा दिया है और पावरपाइन्ट प्रोजेक्शन और लाइव–बैण्ड्स के सहारे जोश के साथ गाए जाने वाले कोरसों और तेज गीतों को आराधना में शामिल किया है। किन्तु साथ ही साथ, अनेक कलीसियाओं, जैसे एब्बोट्सफोर्ड की बेकरव्यू एमबी कलीसिया, ने लिखित–विधि वाली आराधनाएं आरम्भ किया है, जो मेनोनाइट युवाओं के बीच उच्च– कलीसिया परम्परा के प्रति आकर्षण की एक झलक है।

रॉयडन लोयवन मेनोनाइट स्टडीज़ के सभापति और यूनिवर्सिटी ऑफ विन्नीपेग (मनिटोबा, कनाडा) में इतिहास के प्राध्यापक है। **उन्होंने इस लेख को लिखने में सहायता करने पर मर्लिन एप्प, ब्रूस गूएन्थर, मेरी एन्न लोयवन और हैंस वर्नर का आभार व्यक्त किया है।**

नेतृत्व का एक नया नमूना

''कोलम्बिया के लोग पैसे के लिए नहीं लड़ते। आप सत्ता के लिए लड़ते हैं।'' ये उत्तरी अमरीका की एक मिशनरी के शब्द हैं जो उन्होंने कोलम्बिया में अनेक दशकों तक सेवा करने के बाद कहे। वे झगड़ों के कारण कलीसियाई अगुवों के बीच टूटे हुए सम्बन्धों की वास्तविकता पर बोल रहीं थीं।

22 वर्षों तक कोलम्बिया में सेवकाई करने के बाद, मुझे भी अवश्य ही यह मानना होगा कि यह हमारी कलीसिया की एक दुखद सच्चाई है। इस दौरान मैंने हमारी मण्डलियों में अनेक हानिकारक विवादों को देखा है; मैंने बहुत से सम्बन्धों को टूटते भी देखा है, और यह भी देखा है कि अनेक लोगों ने इससे आहत हो कर कलीसिया छोड़ दिया।

किन्तु, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस में मेरी सेवकाई के इस थोड़े समय में, मैंने यह पाया कि अगुवों द्वारा किया जाने वाला अधिकार का दुरुपयोग और उनके बीच के विवाद कोलम्बिया मात्र तक सीमित नहीं हैं। सच्चाई यह है कि, मैं देख रहा हूँ कि ये किसी संस्कृति तक सीमित मुद्दे नहीं हैं और यह सब लोगों और सब देशों में विद्यमान हैं। सांस्कृतिक और धर्मवैज्ञानिक भिन्नताओं के बाद भी, अधिकार के दुरुपयोग और अगुवों बीच विवाद के मुद्दे कैन और हाबिल के समय से हमारे बीच में बने हुए हैं।

संसार भर के अगुवों के बीच में होने वाले विवादों और उनके द्वारा हो रहे अधिकारों के दुरुपयोग के सम्बन्ध में क्या क्या खास बातें मैंने देखी हैं? अपने अनुभव के आधार पर मैं उनमें से निम्नलिखित का उल्लेख कर सकता हूँ:

व्यक्तिगत आवश्यकताएं जिनका समाधान नहीं किया गया है. जब अगुवों का सामना विवाद से होता है तो कुछ भावनात्मक कमजोरियाँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ अगुवे महत्व पाने की भूखें होते हैं। वे चाहते हैं कि उनके द्वारा की जा रही सेवकाई के बदले उनके साथ खास व्यवहार किया जाए या उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाए। जब ऐसा नहीं हो पाता, तो वे दूसरों के प्रति उग्र प्रतिक्रिया देने लगते हैं, या पीछे हटते हुए अकर्मण्य और हीन भावना से भर जाते हैं। हमारी कलीसियाओं की तस्वीर कितनी बदल जाएगी यदि हम मदर टेरेसा के समान यह प्रार्थना करना सीख जाएं, ''हे प्रभु, मुझे सामर्थ दे कि मैं प्रेम पाने की बजाए प्रेम रखने की चाह रखूं।''

यहाँ एक अन्य उदाहरण उन अगुवों का दिया जा सकता है जिन्होंने अपने खालीपन की भावना को उन विशेषाधिकारों के सहारे भरना सीख लिया है जो कलीसिया के पदों के साथ साथ उन्हें मिलते हैं। इन विशेषाधिकारों और लाभों को ये अगुवे किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहते। वे इस बात की परवाह नहीं करते कि लोग उनके इस रवैये से आहत हो सकते हैं। उनके लिए उनकी भावनात्मक जरूरत की पूर्ति लोगों की तुलना में अधिक मायने रखतीं हैं जिनके लिए वे अपना जीवन देने के लिए बुलाए गए हैं।

अति–आदर्शवाद. यह समस्या तब सामने आती है जब अगुवे अपनी गलतियों को मानने या दूसरों को आहत करने के बाद क्षमा मांगने के लिए तैयार नहीं होते। अगुवाई के पदों पर बैठे कुछ लोगों के लिए यह कठिन होता है कि वे अपने आप को असुरक्षित या कमजोर स्थिति में देख सकें। कुछ कारणों से इन अगुवों को ऐसा लगता है कि यदि वे अपने हृदय की बात सामने ले आएं या अपनी गलतियों को मान लें तो वे अपना अधिकार खो बैठेंगे। यह नेतृत्व के विषय में अगुवों की गैर–धार्मिक/सांसारिक समझ के कारण हो सकता है। अपनी भावनाओं को जाहिर न करना एक सशक्त और एकछत्र अगुवे की पहचान है, इस धारणा को ऐसी संस्कृतियों के द्वारा ही बल मिलता है जो अगुवाई को एक सेवा नहीं मानती, जबकि मसीही समझ के अनुसार हमें पद के अधिकार के साथ नहीं बल्कि अपने घावों और निर्बलताओं साथ सेवा करना है।

एकरूपता थोपना. अपने अधिकार का दुरुपयोग करने वाले अगुवों का एक स्वाभाविक रवैया होता है कि वह अनेकता को दबाने का प्रयास करता है। इन प्रकार के अगुवे उनसे अलग विचार रखने वालों को बर्दाश्त नहीं करते। धर्मविज्ञान या नेतृत्वशैली में भिन्नता की आलोचना की जाती है और स्वयं को दूसरों पर अधिकारी मान कर नेतृत्व करने वाले लोगों के द्वारा इस भिन्नता और अनेकता को पापमय करार दे दिया जाता है। चूंकि अनेकता को वे खतरा मानते हैं, ये अगुवे पवित्रशास्त्र सम्मत्त बातों को तय करने के लिए धर्ममत को पैमाना बनाते हैं और इस बात को महत्व नहीं देते कि अनेकता मसीही विश्वास के आरम्भ से ही मसीही विश्वास का हिस्सा रही हैं।

उपरोक्त बातें ऐसे अनेक अगुवों में पाई जाती हैं जो अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने का और कोई दूसरा तरीका नहीं जानते। हमारे विराट संसार में नेतृत्व के एक नये नमूने की आवश्यकता है। हमारी कलीसियाएं इस आवश्यकता को लेकर क्या प्रत्युत्तर दे सकती हैं? परमेश्वर हमें नेतृत्व का एक तरीका देना चाहता है – जो यीशु मसीह के जीवन पर आधारित है और जो हमारे ऐनाबैपटिस्ट मूल्यों में सामने रखा जाता है: नेतृत्व की एक ऐसी शैली जो अपने निजी हितों की नहीं बल्कि दूसरों के भलाई की चिन्ता करती है; नेतृत्व की एक ऐसी शैली जो अपनी गलतियों को मानती है और अपने आप को असुरक्षित और कमजोर स्थिति में रखने के लिए तैयार रहती है; नेतृत्व की एक ऐसी शैली जो अनेकता का आनन्द उठाती है उसे दबाती या सताती नहीं। मेरी यह प्रार्थना है कि कूरियर का यह अंक हमारी सहायता करे, कि विश्वास के विश्वव्यापी घराने के रूप में हम इस दिशा में आगे बढ़ते जाएं।

सीज़र गार्सिया, एमडबल्यूसी जनरल सेक्रेटरी, बगोटा, कोलम्बिया मुख्यालय में सेवारत।

MWC Publications Request

I would like to receive:

MWC Info
A monthly email alert with links to articles on MWC website.

☐ English
☐ Spanish
☐ French

Courier
Published bimonthly (every other month): twice (April and October) as a 16-page magazine and four times (February, June, August, December) as a four-Page Magazine

☐ English
☐ Spanish
☐ French

☐ Electronic Version (pdf)
☐ Print Version

☐ Check here if you are currently receiving the print version of *Courier/Correo/ Courrier* and want to receive the electronic version instead. If you want to receive both the electronic and print versions, check both boxes above.

Name _____

_____

Address _____

_____

_____

_____

Email _____

Phone _____

Complete this form and send to:
Mennonite World Conference
50 Kent Avenue, Suite 206
Kitchener, Ontario N2G 3R1 Canada